विषय सूची

पाठ सं.	पाठ	पृष्ठ संख्या
1.	परिचय	1
2.	स्थान बल	3
3.	दिग्बल	13
4.	काल बल	15
5.	चेष्टा बल	25
6.	नैसर्गिक बल	34
7.	दृष्टि बल	35
8.	ग्रहों का षड्बल	40
9.	इष्ट व कष्ट फल	42
10.	भाव बल	44

Future Point

Future Point

अध्याय 1

परिचय

ग्रहों को राशिचक्र में उनकी विशेष स्थिति के फलस्वरूप बल प्राप्त होता है। ग्रहों का सही बल सुनिश्चित करने के लिए यह नितान्त आवश्यक है कि राशिचक्र में उनकी स्थिति का पूर्ण रूप से विवेचन किया जाए। बलों के भिन्न–भिन्न स्रोतों को ही ग्रह बलों का नाम दिया गया है।

पाराशर पद्धति में 6 प्रकार के ग्रह बलों का वर्णन किया गया है जो कि निम्न हैं:–

1. स्थान बल
2. दिग्बल
3. काल बल
4. चेष्टा बल
5. नैसर्गिक बल
6. दृग्बल या दृष्टि बल

उपरोक्त 6 प्रकार के बलों को षड्बल कहा जाता है।

षड्बल की उपयोगिता:

किसी भी ज्योतिषी का मुख्य उद्देश्य जन्मपत्री का यथार्थ फल प्राप्त करना है। षड्बल की गणना द्वारा इस उद्देश्य की प्राप्ति निम्न प्रकार से होती है:

1. ग्रहों का षड्बल जन्मपत्री में प्रत्येक ग्रह की क्षमता तथा कमजोरी का लेखा–जोखा प्रस्तुत करता है। इससे जन्मपत्री में प्रत्येक ग्रह किस प्रकार के परिणाम देगा, इसकी जानकारी सहज रूप में प्राप्त हो जाती है।

2. ग्रहों के षड्बल तथा प्रत्येक भाव के बल की गणना द्वारा यह ज्ञात किया जा सकता है कि लग्न, चंद्र और सूर्य में सर्वाधिक शक्तिशाली कौन है। लग्न, चंद्र और सूर्य में जो भी सर्वाधिक शक्तिशाली होता है, ज्योतिष शास्त्र में उसी कुंडली से की गई भविष्यवाणियां सर्वाधिक सही पाई जाती हैं।

3. विंशोत्तरी दशा में किसी महादशा–अंतरदशा के समय यह ध्यान रखना चाहिए कि महादशा–अन्तरदशा के स्वामियों में से किसका बल ज्यादा है। उदाहरण के तौर पर सूर्य–चंद्र की दशा में यदि सूर्य का बल चंद्रमा से अधिक है तो जातक को मुख्यतः सूर्य ग्रह के ही परिणाम मिलेंगे। इसके विपरीत यदि चंद्र का बल अधिक है तो सूर्य की महादशा होते हुए भी चंद्र का प्रभाव सूर्य की अपेक्षा अधिक महसूस होगा।

4. यदि षड्बल की गणना सही रूप से की जाए, तो भविष्यवाणियां सही ढंग से तथा पूर्ण विश्वास से की जा सकती हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

उदाहरण जन्मपत्रिका

जातक का जन्म 16.40 घंटे (भारतीय मानक समय), 22 जनवरी 2000 को नई दिल्ली में हुआ है। ग्रह स्पष्ट व लग्न निम्न प्रकार हैं।

लग्न	$2^s\ 23^0\ 42'$
सूर्य	$9^s\ 7^0\ 52'$
चंद्र	$3^s\ 25^0\ 18'$
मंगल	$10^s\ 20^0\ 21'$
बुध	$9^s\ 12^0\ 8'$
बृहस्पति	$0^s\ 2^0\ 58'$
शुक्र	$8^s\ 3^0\ 15'$
शनि	$0^s\ 16^0\ 32'$
राहु	$3^s\ 9^0\ 50'$
केतु	$9^s\ 9^0\ 50'$
अस्त लग्न	$8^s\ 23^0\ 42'$
मध्य लग्न	$11^s\ 12^0\ 46'$
पाताल लग्न	$5^s\ 12^0\ 46'$

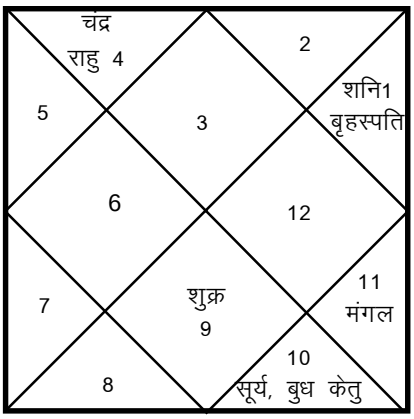

इस पुस्तक में षड्बल की गणना उपर्युक्त ग्रह स्पष्टों के आधार पर ही की जाएगी।

अभ्यास

प्रश्न 1. षड्बल क्या है ? यह भविष्यवाणी करने में किस प्रकार से मदद करता है ?

Future Point

अध्याय 2

स्थान बल

किसी भी ग्रह को उसकी राशिचक्र में विशेष स्थिति के कारण स्थान बल मिलता है। यह विशेष स्थिति उस ग्रह की उच्च, नीच, स्व, मूल त्रिकोण, मित्र, सम या शत्रु राशि हो सकती है। किसी भी राशि में विशेष अंश पर स्थिति के कारण जो बल ग्रह को मिलता है उसको स्थान बल कहते हैं।

स्थानबल साधन

किसी भी ग्रह के बल को मापने की इकाई रूपा है जो कि 60 षष्ट्यांश या विरूपा के बराबर होती है।

स्थान बल में निम्न बल शामिल हैं:

(i) उच्चबल

(ii) सप्तवर्गज बल

(iii) युग्मायुग्म बल

(iv) केन्द्र बल

(v) द्रेष्काण बल

(i) उच्चबल साधन

प्रत्येक ग्रह के उच्च तथा नीच अंश निम्न प्रकार से हैं:

ग्रह	उच्च अंश	नीच अंश
सूर्य	10^0	190^0
चंद्र	33^0	213^0
मंगल	298^0	118^0
बुध	165^0	345^0
बृहस्पति	95^0	275^0
शुक्र	357^0	177^0
शनि	200^0	20^0

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

यदि ग्रह उच्च अंश पर है तब उसको 1 रूपा उच्च बल मिलता है, यदि ग्रह नीच अंश पर है तब उसको शून्य उच्च बल मिलता है। उच्च अंश से नीच अंश की तरफ उच्च बल क्रमशः घटता है और नीच अंश पर पहुँचकर शून्य हो जाता है।

उच्च बल (विरूपा का षष्ट्यांश में)

$$= \frac{\text{स्पष्ट ग्रह और ग्रह के नीच अंश में अन्तर}}{3}$$

यदि उपरोक्त अन्तर 6 राशि या 180° से अधिक हो तो उसको 12 राशि में से घटा लें।

उदाहरण जन्म पत्रिका में उच्च बल साधन निम्न प्रकार से है:

तालिका 1 : उच्च बल

ग्रह	ग्रह स्पष्ट (क)	नीच अंश (ख)	अन्तर क ~ ख (ग)	उच्च बल (षष्ट्यांश) ग/3
सूर्य	277^{0} 52'	190^{0}	87^{0} 52'	29.29
चंद्र	115^{0} 18'	213^{0}	97^{0} 42'	32.57
मंगल	320^{0} 21'	118^{0}	202^{0} 21' (क्योंकि यह अन्तर 6 राशि से अधिक है इसको 12 राशि से घटाने पर 360^{0}-202^{0}21' =157^{0}39'	52.55
बुध	282^{0} 8'	345^{0}	62^{0} 52'	20.96
बृहस्पति	2^{0} 58'	275^{0}	272^{0}2' > 180^{0} ($\therefore$$360^{0}$-$272^{0}$2') =$87^{0}$58'	29.32
शुक्र	243^{0} 15'	177^{0}	66^{0} 15'	22.08
शनि	16^{0} 32'	20^{0}	3^{0} 28'	1.16

(ii) सप्तवर्गज बल साधन

किसी भी ग्रह को राशि, होरा, द्रेष्काण, सप्तांश, नवांश, द्वादशांश और त्रिशांश में उसकी स्थिति के कारण जो बल मिलता है उसको सप्तवर्गज बल कहते हैं। इन सातों कुंडलियों में ग्रह और जिस राशि में वह स्थित हो उसके स्वामी के साथ उसके संबंध के अनुसार उसको बल मिलता है।

ग्रहों के आपसी संबंध

ग्रहों के दो प्रकार के आपसी संबंध होते हैं:—

Future Point

(क) नैसर्गिक या स्वाभाविक संबंध

नैसर्गिक संबंध स्थायी होता है और यह ग्रहों की राशिचक्र में स्थिति पर निर्भर नहीं करता। इस तरह का संबंध ग्रहों की प्रकृति के अनुसार होता है। स्थायी संबंध तीन प्रकार का होता है– मित्र, सम तथा शत्रु। ग्रहों को अपने मित्र ग्रहों से बल मिलता है और शत्रु ग्रहों से बल कम होता है। नैसर्गिक संबंध सभी जन्मपत्रियों में समान होते हैं।

तालिका 2 : नैसर्गिक या स्वाभाविक संबंध

ग्रह	मित्र	सम	शत्रु
सूर्य	चंद्र, मंगल, बृहस्पति	बुध	शुक्र, शनि
चंद्र	सूर्य, बुध	मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि	कोई नहीं
मंगल	सूर्य, चंद्र, बृहस्पति	शुक्र, शनि	बुध
बुध	सूर्य, शुक्र	मंगल, बृहस्पति, शनि	चंद्र
बृहस्पति	सूर्य, चंद्र, मंगल	शनि	बुध, शुक्र
शुक्र	बुध, शनि	मंगल, बृहस्पति	सूर्य, चंद्र
शनि	बुध, शुक्र	बृहस्पति	सूर्य, चंद्र, मंगल

नैसर्गिक संबंध को समझने के लिए ग्रहों को दो भागों में बांटा जा सकता है– एक भाग में सूर्य, मंगल और बृहस्पति तथा दूसरे भाग में बुध, शुक्र तथा शनि। चंद्र इन दोनों भागों में सम है।

नैसर्गिक संबंध इस सिद्धान्त पर आधारित है कि ग्रह की मूल त्रिकोण राशि से दूसरी, चौथी, पांचवी, आठवीं, नवीं तथा बारहवीं राशि के स्वामी उसके मित्र तथा बाकी तीसरी, छठी, सातवीं, दसवीं और ग्यारहवीं राशि के स्वामी उस ग्रह के शत्रु होते हैं। ग्रह की उच्च राशि का स्वामी हमेशा उसका मित्र होता है, भले ही उच्च राशि ग्रह की मूल त्रिकोण राशि से तीसरी, छठी, सातवीं, दसवीं या ग्यारहवीं स्थिति में हों।

उदाहरण के तौर पर हम शनि ग्रह के स्थायी संबंध उपरोक्त सिद्धान्त से निकालते हैं। शनि की मूल त्रिकोण राशि कुम्भ है।

हम कुम्भ राशि से शुरू करते हैं:

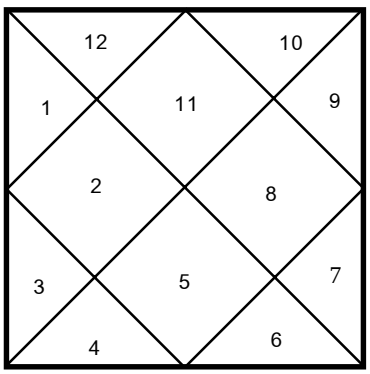

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

विभिन्न ग्रहों की स्थिति मूल त्रिकोण राशि से इस प्रकार हैः–

बृहस्पतिः मित्र (दूसरी राशि का स्वामी) + शत्रु (ग्यारहवीं राशि का स्वामी) = सम

मंगलः शत्रु (तीसरी राशि का स्वामी) + शत्रु (दसवीं राशि का स्वामी) = शत्रु

शुक्रः मित्र (चौथी राशि का स्वामी) + मित्र (नौवीं स्थिति का स्वामी व उच्च राशि का स्वामी) = मित्र

बुधः मित्र (पांचवीं राशि का स्वामी) + मित्र (आठवीं राशि का स्वामी) = मित्र

चंद्रः शत्रु (छठी राशि का स्वामी) = शत्रु

सूर्यः शत्रु (सातवीं राशि का स्वामी) = शत्रु

इसलिये बुध, शुक्र शनि के नैसर्गिक मित्र, सूर्य, चंद्र और मंगल शत्रु और बृहस्पति शनि का सम ग्रह है।

(ख) तात्कालिक या अस्थायी संबंध

जैसा कि नाम से विदित है, यह संबंध अस्थायी होता है तथा राशिचक्र में ग्रहों की स्थिति पर निर्भर करता है। इस तरह का संबंध प्रत्येक जन्मपत्रिका में अलग–अलग होता है। जन्म लग्न में जिस राशि में ग्रह स्थित है उस राशि से 2, 3, 4, 10, 11, 12 राशियों में स्थिति ग्रह उसके तात्कालिक मित्र तथा शेष 1, 5, 6, 7, 8, 9 राशियों में स्थित ग्रह तात्कालिक शत्रु होते हैं।

नैसर्गिक तथा तात्कालिक संबंधों को मिलाकर पंचधा अर्थात् पाँच भेदों वाला मित्रता संबंध प्राप्त किया जाता है। यह निम्न प्रकार से हैः

(i)	नैसर्गिक मित्र	+	तात्कालिक मित्र	=	अधि मित्र
(ii)	नैसर्गिक मित्र	+	तात्कालिक शत्रु	=	सम
(iii)	नैसर्गिक शत्रु	+	तात्कालिक शत्रु	=	अधि शत्रु
(iv)	नैसर्गिक शत्रु	+	तात्कालिक मित्र	=	सम
(v)	नैसर्गिक सम	+	तात्कालिक मित्र	=	मित्र
(vi)	नैसर्गिक सम	+	तात्कालिक शत्रु	=	शत्रु

इसलिए विभिन्न ग्रहों में अधिमित्र, मित्र, सम, शत्रु और अधिशत्रु ये पाँच प्रकार के संबंध बनते हैं।

Future Point

उदाहरण जन्म पत्रिका में तात्कालिक संबंध निम्न प्रकार से हैं:

तालिका 3 : तात्कालिक संबंध

ग्रह	तात्कालिक मित्र	तात्कालिक शत्रु
सूर्य	मंगल, शनि, बृहस्पति, शुक्र	चंद्र, बुध
चंद्र	बृहस्पति, शनि	चंद्र, मंगल, बुध, शुक्र
मंगल	सूर्य, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि	चंद्र
बुध	मंगल, बृहस्पति, शुक्र, शनि	चंद्र, सूर्य
बृहस्पति	चंद्र, सूर्य, मंगल, बुध	शुक्र, शनि
शुक्र	सूर्य, मंगल, बुध	चंद्र, बृहस्पति, शनि
शनि	चंद्र, मंगल, सूर्य, बुध	बृहस्पति, शुक्र

उदाहरण जन्मपत्रिका में तात्कालिक और नैसर्गिक संबंधों को मिलाकर पंचधा मैत्री तालिका निम्न प्रकार से है:

तालिका 4 : उदाहरण जन्म पत्रिका में पंचधा मैत्री तालिका

ग्रह	अधि मित्र	मित्र	सम	शत्रु	अधिशत्रु
सूर्य	मंगल, बृहस्पति	–	चंद्र, शुक्र, शनि	बुध	–
चंद्र		बृहस्पति, शनि	सूर्य, बुध	मंगल, शुक्र	–
मंगल	सूर्य, बृहस्पति	शुक्र, शनि	चंद्र, बुध	–	–
बुध	शुक्र	मंगल, बृहस्पति, शनि	सूर्य	–	चंद्र
बृहस्पति	चंद्र, सूर्य, मंगल	–	बुध	शनि	शुक्र
शुक्र	बुध	मंगल	सूर्य, शनि	बृहस्पति	चंद्र
शनि	बुध	–	सूर्य, चंद्र, मंगल, शुक्र	बृहस्पति	–

Future Point

उदाहरण जन्मपत्री के सातों वर्ग निम्न प्रकार से हैं:

लग्न

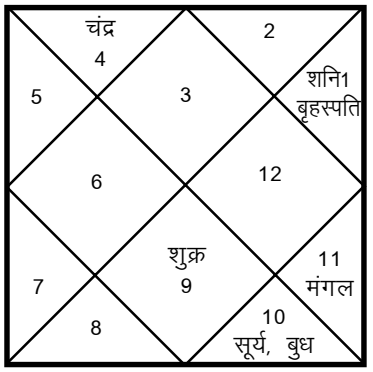

होरा

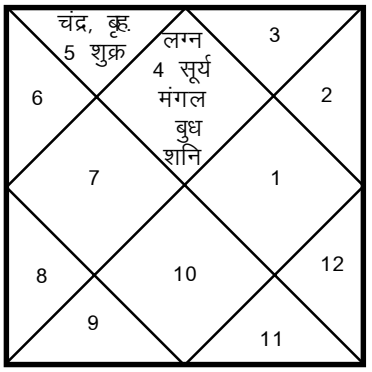

द्रेष्काण

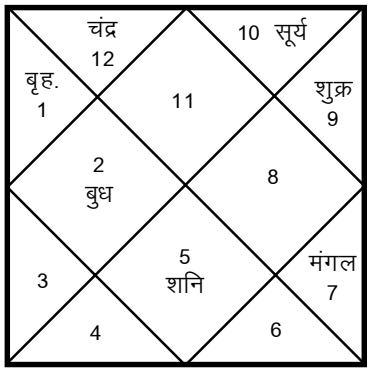

सप्तांश

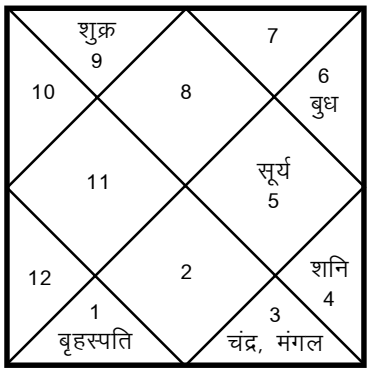

नवांश

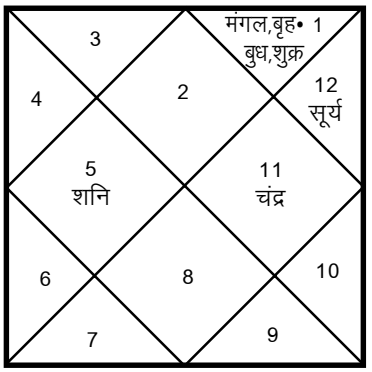

द्वादशांश

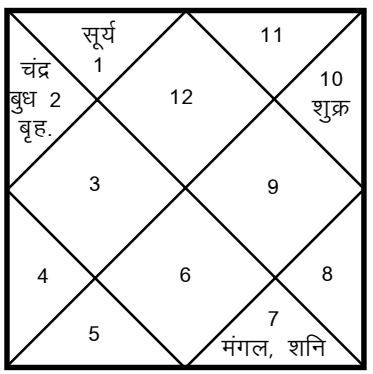

त्रिशांश

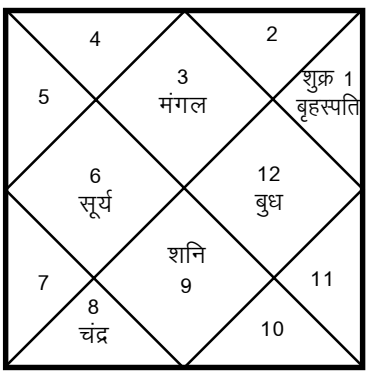

Future Point

ग्रहों के सप्तवर्गज बल साधन के लिए सातों वर्गों में ग्रह और उसकी राशि के स्वामी में संबंध पर विचार करना होगा। ग्रहों का सप्तवर्गज बल इसी संबंध पर निर्भर करता है।

यदि ग्रह मूल त्रिकोण राशि में है (सिर्फ लग्न के लिए)	–45 षष्ट्यांश
यदि ग्रह स्वराशि में है	–30 ,,
यदि ग्रह अतिमित्र वर्ग में है	–22.5 ,,
यदि ग्रह अतिमित्र वर्ग में है	–15 ,,
यदि ग्रह सम वर्ग में है	–7.5 ,,
यदि ग्रह शत्रु वर्ग में है	–3.75 ,,
यदि ग्रह अधिशत्रु वर्ग में है	–1.875 ,,

उपरोक्त सातों वर्गों में ग्रह के बलों को जोड़कर प्रत्येक ग्रह का सप्तवर्गज बल साधन किया जाता है।

तालिका 5 : सात वर्गों में उदाहरण जन्मपत्रिका के ग्रहों में संबंध

ग्रह	लग्न	होरा	द्रेष्काण	सप्तांश	नवांश	द्वादशांश	त्रिशांश
सूर्य	सम	सम	सम	स्वराशि	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु
चंद्र	स्वराशि	सम	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	सम	मित्र	सम	स्वराशि	मित्र	सम
बुध	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र	स्वराशि	मित्र	अतिमित्र	मित्र
बृहस्पति	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
शुक्र	शत्रु	सम	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	शत्रु
शनि	सम	सम	सम	सम	सम	सम	शत्रु

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

तालिका 6 : उदाहरण जन्मपत्रिका में ग्रहों का सप्तवर्गज बल

ग्रह	लग्न	होरा	द्रेष्काण	सप्तांश	नवांश	द्वादशांश	त्रिशांश	सप्तवर्गज बल (षष्ट्यांश में)
सूर्य	7.5	7.5	7.5	30	22.5	22.5	3.75	101.25
चंद्र	30	7.5	15	7.5	15	3.75	3.75	82.50
मंगल	15	7.5	15	7.5	30	15	7.5	97.50
बुध	15	1.875	22.5	30	15	22.5	15	121.875
बृहस्पति	22.5	22.5	22.5	22.5	22.5	22.5	1.875	136.875
शुक्र	3.75	7.5	3.75	3.75	15	7.5	3.75	45
शनि	7.5	7.5	7.5	7.5	7.5	7.5	3.75	48.75

(iii) युग्मायुग्म बल साधन

युग्म अर्थात् सम राशि व अयुग्य अर्थात् विषम राशि। किसी भी ग्रह का युग्यायुग्म बल उसके राशि व नवांशवर्ग में सम और विषम राशि में स्थिति के कारण होता है। कुछ ग्रहों को राशि व नवांश वर्ग में सम राशि में स्थिति होने के कारण तथा कुछ ग्रहों को विषम राशि में स्थित होने के कारण बल मिलता है।

शुक्र व चंद्रमा को समराशि में राशि व नवांश वर्ग स्थित होने के कारण 15 षष्ट्यांश बल मिलता है। बृहस्पति, सूर्य, मंगल, बुध व शनि को राशि व नवांश वर्ग में विषम राशि में स्थित होने पर 15 षष्ट्यांश बल मिलता है। इसका अर्थ यह है कि पुरूष और नपुंसक ग्रह विषम राशि में तथा स्त्री ग्रह सम राशि में बलवान होते हैं।

राशि व नवांश वर्ग का कुल बल युग्मायुग्म बल कहलाता है।

तालिका 7 : उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों का युग्मायुग्म बल

ग्रह	राशि	नवांश	राशि बल	नवांश बल	युग्मायुग्म बल
सूर्य	सम	सम	0	0	0
चंद्र	सम	विषम	15	0	15
मंगल	विषम	विषम	15	15	30
बुध	सम	विषम	0	15	15
बृहस्पति	विषम	विषम	15	15	30
शुक्र	विषम	विषम	0	0	0
शनि	विषम	विषम	15	15	30

Future Point

(iv) केन्द्र बल साधन

यदि ग्रह जन्म कुण्डली में केन्द्र स्थान (1, 4, 7, 10) में हो तो 60 षष्ट्यांश, पणफर स्थान (2, 5, 8, 11) में हो तो 30 षष्ट्यांश और अपोक्लिम स्थान (3, 6, 9, 12) में हो तो 15 षष्ट्यांश केन्द्र बल मिलता है।

केन्द्र बल साधन निम्न प्रकार से है:

तालिका 8 उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों का केन्द्र बल

ग्रह	जन्म कुण्डली में ग्रह की स्थिति	केन्द्र बल (षष्ट्यांश में)
सूर्य	पणफर	30
चंद्र	पणफर	30
मंगल	अपोक्लिम	15
बुध	पणफर	30
बृहस्पति	पणफर	30
शुक्र	केन्द्र	60
शनि	पणफर	30

(v) द्रेष्काण बल साधन

पुरूष ग्रहों (सूर्य, मंगल, बृहस्पति) को प्रथम द्रेष्काण में, नपुंसक ग्रहों (बुध, शनि) को द्वितीय द्रेष्काण में तथा स्त्री ग्रहों (चंद्र, शुक्र) को तृतीय द्रेष्काण में 15 द्रेष्काण षष्ट्यांश बल प्राप्त होता है। इसे द्रेष्काण बल कहते हैं।

तालिका 9 : उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों का द्रेष्काण बल

ग्रह	लिंग	द्रेष्काण	द्रेष्काण बल (षष्ट्यांश में)
सूर्य	पुरूष	प्रथम	15
चंद्र	स्त्री	तृतीय	15
मंगल	पुरूष	तृतीय	00
बुध	नपुंसक	द्वितीय	15
बृहस्पति	पुरूष	प्रथम	15
शुक्र	स्त्री	प्रथम	00
शनि	नपुंसक	द्वितीय	15

उपरोक्त पाँच प्रकार के बलों का जोड़ स्थान बल कहलाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

तालिका 10 : उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों का स्थान बल

ग्रह	उच्च बल	सप्तवर्गज बल	युग्मायुग्म बल	केन्द्र बल	द्रेष्काण बल	स्थान बल (षष्ट्यांश)
सूर्य	29.29	101.25	00	30	15	175.54
चंद्र	32.57	82.50	15	30	15	175.07
मंगल	52.55	97.50	30	15	00	195.05
बुध	20.96	121.875	15	30	15	202.835
बृहस्पति	29.32	136.875	30	30	15	241.195
शुक्र	22.08	45.00	00	60	00	127.08
शनि	1.16	48.75	30	30	15	124.91

अभ्यास

प्रश्न 1. षड्बल को मापने की इकाई क्या है ?

प्रश्न 2. स्थान बल से आप क्या समझते हैं ? स्थान बल कितने प्रकार का होता है ? प्रत्येक का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 3. सप्तवर्गज बल से आप क्या समझते हैं ? वर्णन कीजिए।

प्रश्न 4. ग्रहों की निम्न स्थितियों में कितना सप्तवर्गज बल मिलता है:

(i) मूल त्रिकोण राशि (ii) सम राशि
(iii) स्वराशि (iv) शत्रु राशि
(v) मित्र राशि (vi) अधिशत्रु राशि
(vii) अतिमित्र राशि

प्रश्न 5. युग्मायुग्म बल क्या है ?

प्रश्न 6. ग्रहो को सम तथा विषम राशि में कितना युग्मायुग्म बल मिलता है ?

प्रश्न 7. केन्द्र बल क्या है ?

प्रश्न 8. निम्न स्थितियों में ग्रहों को कितना केन्द्र बल मिलता है–

(क) केन्द्र (ख) पणफर (ग) अपोक्लिम

प्रश्न 9. द्रेष्काण बल का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 10. स्थान बल की गणना किस प्रकार की जाती है ?

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

Future Point

अध्याय 3

दिग्बल

ग्रह को विशष दिशा में स्थित होने के कारण जो बल मिलता है वह दिग्बल कहलाता है। किसी भी जन्मपत्रिका में लग्न पूर्व दिशा को, वतुर्थ भाव उत्तर दिशा को, सप्तम भाव पश्चिम दिशा को तथा दशम भाव दक्षिण दिशा को दर्शाता है।

बृहस्पति व बुध को लग्न में, सूर्य व मंगल को दशम भाव में, शनि को सप्तम भाव में तथा चंद्र व शुक्र को चतुर्थ भाव में पूर्ण दिग्बल मिलता है।

पूर्णबल की विपरीत स्थिति में ग्रह के स्थित होने पर दिग्बल शून्य हो जाता है। उदाहरण के लिए यदि शनि को पश्चिम दिशा में पूर्ण दिग्बल मिलता है तो उसको पूर्व दिशा में शून्य दिग्बल मिलेगा। इसलिए पूर्णबल बिन्दु से 180° दूर पर शून्य दिग्बल बिन्दु होता है। ग्रह को पूर्णबल बिन्दु की ओर अग्रसर होते हुए दिग्बल में वृद्धि होती है तथा शून्यबल बिन्दु की ओर जाने में क्रमशः दिग्बल में कमी होती है।

दिग्बल साधन के लिए ग्रह के अंश और उसके शून्य बल बिन्दु में अन्तर निकालना होगा। यदि यह अन्तर 180° से अधिक है तो उसको 360° से घटाना होगा।

दिग्बल चाप = ग्रह स्पष्ट–ग्रह का शून्य बल बिन्दु

ग्रह को अपने पूर्ण बल बिन्दु पर होने से 60 षष्ट्यांश दिग्बल मिलता है। शून्य बल बिन्दु पर ग्रह को शून्य दिग्बल मिलता है। दिग्बल चाप को तीन से भाग देने पर दिग्बल ज्ञात किया जा सकता है।

$$\text{ग्रह का दिग्बल} = \frac{\text{ग्रह का दिग्बल चाप}}{3}$$

उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों के शून्य बल बिन्दु निम्न प्रकार हैं:

ग्रह	**शून्य बल बिन्दु**
बुध, बृहस्पति	$8^s\,23^0\,42'$ या $263^0\,42'$ (सप्तम भाव स्पष्ट)
शनि	$2^s\,23^0\,42'$ या $83^0\,42'$ (लग्न)
चंद्र, शुक्र	$11^s\,12^0\,46'$ या $342^0\,46'$ (दशम भाव स्पष्ट)
सूर्य, मंगल	$5^s\,12^0\,46'$ या $162^0\,46'$ (चतुर्थ भाव स्पष्ट)

तालिका 11 : उदाहरण जन्म पत्रिका में दिग्बल साधन

ग्रह	ग्रह स्पष्ट (क)	शून्य दिग्बल बिन्दु (ख)	दिग्बल चाप (ग)=क ~ ख	दिग्बल (षष्ट्यांश में ग / 3)
सूर्य	$277^0\ 52'$	$162^0\ 46'$	$115^0\ 6'$	38.37
चंद्र	$115^0 18'$	$342^0\ 46'$	$132^0\ 32'$	44.18
मंगल	$320^0\ 21'$	$162^0\ 46'$	$157^0\ 35'$	52.53
बुध	$282^0\ 8'$	$263^0\ 42'$	$18^0\ 26'$	6.14
बृहस्पति	$2^0\ 58'$	$263^0\ 42'$	$59^0\ 16'$	19.76
शुक्र	$243^0\ 15'$	$342^0\ 46'$	$99^0\ 31'$	33^0 17
शनि	$16^0\ 32'$	$83^0\ 42'$	$67^0\ 10'$	22.39

अभ्यास

प्रश्न 1. दिग्बल क्या है ? दिग्बल साधन किस प्रकार किया जाता है ?

प्रश्न 2. किस दिशा और भाव में

(i) सूर्य और मंगल को पूर्ण और शून्य दिग्बल मिलता है।

(ii) बृहस्पति और बुध को पूर्ण और शून्य दिग्बल मिलता है ?

(iii) शनि को पूर्ण और शून्य दिग्बल मिलता है।

(iv) चंद्र और शुक्र को शून्य दिग्बल मिलता है।

प्रश्न 3. दिग्बल चाप क्या है ?

Future Point

अध्याय 4

काल बल

यह समय का बल है। इसका साधन जन्म के वर्ष, माह, वार, दिन आदि के अनुसार किया जाता है। काल बल साधन के लिए समयानुसार ग्रहों के बल में परिवर्तन का अध्ययन किया जाता है।

काल बल निम्न 9 बलों का योग होता है।

(i) नतोन्नत या दिवरात्रि बल
(ii) पक्ष बल
(iii) त्रिभाग बल
(iv) वर्षाधिपा बल
(v) मास बल
(vi) वार बल
(vii) होरा बल
(viii) अयन बल
(ix) युद्ध बल

(i) नतोन्नत या दिवरात्रि बल

दिन या रात्रि में जन्म होने के कारण ग्रह को जो बल मिलता है वह नतोन्नत बल कहलाता है। इसमें दिवा बल तथा रात्रि बल शामिल हैं।

चंद्र, मंगल व शनि मध्यरात्रि को पूर्ण बल शाली होते हैं तथा ये ग्रह दिन के मध्य में बल रहित होते हैं। इसी प्रकार सूर्य, बृहस्पति और शुक्र मध्य दिन में पूर्ण बलशाली तथा मध्य रात्रि में बल रहित होते हैं। बुध का बल दिन अथवा रात्रि में एक समान रहता है। चंद्र, मंगल व शनि को मध्य रात्रि में 60 षष्ट्यांश तथा सूर्य, बृहस्पति व शुक्र को मध्य दिन में 60 षष्ट्यांश बल मिलता है। बुध को हमेशा 60 षष्ट्यांश नतोन्नत बल मिलता है।

नतोन्नत बल साधन

पहला तरीकाः

(i) दिन मान तथा रात्रि मान को दो बराबर हिस्सों में बांट लेते हैं। इस प्रकार दिनार्ध तथा रात्रियार्ध की प्राप्ति होती है।

(ii) यदि इष्टकाल दिनमान के दूसरे हिस्से से रात्रिमान के पहले हिस्से तक हो तो नत कहलाता है अन्यथा उन्नत।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

(iii) दिनार्ध को इष्टकाल से घटाते हैं। यदि रोष 30 घटी से कम है तो यह नत होता है।

(iv) यदि (iii) में शेष 30 घटी से अधिक है तो इसको 60 से घटाकर उन्नत निकाला जाता है।

यह ध्यान देने योग्य विशेष बात है कि दिनार्ध को ही इष्टकाल से घटाना है। यदि इष्टकाल दिनार्ध से कम हो तो इष्टकाल में 60 जोड़कर उससे दिनार्ध को घटाते हैं।

सूर्य, बृहस्पति और शुक्र का दिव बल = उन्नत × 2

चंद्र, मंगल और शनि का रात्रि बल = नत × 2

बुध को हमेशा 60 षष्ट्यांश नतोन्नत बल मिलता है।

उदाहरण: जन्म पत्रिका में नतोन्नत बल साधन निम्न प्रकार से होगा:

सूर्योदय समय	7 घंटे	17 मिनट	
सूर्यास्त समय	17 घंटे	48 मिनट	
दिन मान	26 घटी	15 पल	
रात्रि मान	33 घटी	45 पल	
दिनार्ध	13 घटी	7 पल	30 विपल
रात्रियार्ध	16 घटी	52 पल	30 विपल
इष्टकाल	23 घटी	27 पल	30 विपल

इष्टकाल–दिनार्ध

= 23 घटी 27 पल 30 विपल – 13 घटी 7 पल 30 विपल

= 10 घटी 20 पल = 10.3 घटी

यह अन्तर 30 से कम होने के कारण नत हुआ और उसको 30 से घटाने पर (30–10.3) = 19.7 उन्नत हुआ।

सूर्य, बृहस्पति और शुक्र का दिव बल = उन्नत × 2

= 19.7 × 2

= 39.4

चंद्र, मंगल और शनि का रात्रि बल = नत × 2

= 10.3 × 2

= 20.6

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

तालिका 12 : उदाहरण जन्म पत्रिका में दिग्बल साधन

ग्रह	नतोन्नत बल (षष्ट्यांश में)
सूर्य	39.4
चंद्र	20.6
मंगल	20.6
बुध	60.0
बृहस्पति	39.4
शुक्र	39.4
शनि	20.6

दूसरा तरीका: इस तरीके में जन्म समय को अंशों में बदलकर नतोन्नत बल निम्न प्रकार निकाला जाता है:

दिव बल (सूर्य, बृहस्पति, शुक्र) $= \frac{\text{अंशों में जन्म समय}}{3}$

रात्रि बल (चंद्र, मंगल, शनि) $= \frac{180^\circ - \text{अंशों में जन्म समय}}{3}$

मध्य रात्रि व मध्य दिन का अन्तर 180° होता है। जन्म समय स्थानीय समय के अनुसार होता है। प्रत्येक घंटे को 15° के बराबर तथा 4 मिनट को 1° के बराबर मानकर जन्म समय को अंशों में बदला जाता है। यदि जन्म समय अंशों में 180° से अधिक है तो उसको 360° से घटा लिया जाता है।

उदाहरण जन्म पत्रिका में

जन्म समय 16 घंटे 40 मिनट (भारतीय मानक समय), दिल्ली के लिए स्थानीय समय समयान्तर संस्कार (–) 21 मिनट 8 सैकन्ड

∴ जन्म का स्थानीय समय = 16 घंटे 40 मि.

$= \frac{(-)\ 21 \text{ मि. } 8 \text{ से.}}{16 \text{ घंटे } 18 \text{ मिनट } 52 \text{ सैकन्ड}}$

अंशो में जन्म समय = $16 \times 15 = 240$

$+ \frac{18.8}{4} = 4.7$

244.70^0

क्योंकि यह 180° से अधिक है इसको 360° से घटाने पर 360–244.7 = 115.3° प्राप्त हुए।

∴ सूर्य, बृहस्पति तथा शुक्र का दिव बल $= \frac{115.3}{3}$

$= 38.4$

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

चंद्र, मंगल तथा शनि का रात्रि बल $= \frac{180-115.3}{3}$

$= \frac{64.7}{3} = 21.6$

(ii) पक्ष बल

ग्रहों को कृष्ण अथवा शुक्ल पक्ष में जन्म होने के कारण जो बल मिलता है, पक्ष बल कहलाता है। एक चंद्र मास में कृष्ण पक्ष तथा शुक्ल पक्ष होते हैं। प्रत्येक पक्ष 15 चंद्र दिनों के बराबर होता है। शुक्ल पक्ष में चंद्रमा बढ़ता है तथा कृष्ण पक्ष में चंद्र घटता है। सभी अशुभ ग्रह कृष्ण पक्ष में बली होते हैं तथा शुभ ग्रह शुक्ल पक्ष में बली होते हैं।

बृहस्पति, शुक्र तथा शुभ ग्रहो से युक्त बुध नैसर्गिक शुभ ग्रह हैं तथा सूर्य, मंगल, शनि तथा अशुभ ग्रहों से युक्त बुध, नैसर्गिक अशुभ ग्रह हैं।

चंद्र शुक्ल पक्ष की अष्टमी से कृष्ण पक्ष की अष्टमी तक शुभ माना जाता है तथा बाकी दिनों में अशुभ।

यदि चंद्र स्पष्ट – सूर्य स्पष्ट $\leq 180°$ तब शुक्ल पक्ष होता है।

यदि चंद्र स्पष्ट – सूर्य स्पष्ट $> 180°$ तब कृष्ण पक्ष होता है।

पक्ष बल साधन निम्न प्रकार से किया जाता है:

(i) सूर्य स्पष्ट को चंद्र स्पष्ट से घटा लें।

(ii) यदि (i) 180° से अधिक है तो उसको 360° से घटाकर 180° से कम बना लें।

(iii) (ii) को 3 से भाग देने पर शुभ ग्रहों का पक्ष बल प्राप्त होता है।

(iv) शुभ ग्रहों के पक्ष बल को 60 से घटाने पर अशुभ ग्रहों का पक्ष बल प्राप्त होता है।

(v) चंद्रमा का उपरोक्त विधि से पक्ष बल निकाल कर उसको दुगना कर दिया जाता है।

उदाहरण जन्म पत्रिका में पक्ष बल साधन निम्न प्रकार से होगा:

चंद्र स्पष्ट – 115°18′

सूर्य स्पष्ट – 227°52′

सूर्य और चंद्र स्पष्ट में अन्तर $= 277°52' - 115°18'$

$= 162°34$

∴ शुभ ग्रहों का पक्ष बल $= \frac{162°34'}{3} = \frac{162.6}{3} = 54.2$

अशुभ ग्रहों का पक्ष बल $= 60-54.2 = 5.8$

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

उदाहरण जन्म पत्रिका में चंद्र शुभ है तथा बुध अशुभ। चंद्रमा का पक्ष बल इसलिए 54.2 × 2 = 108.5 हुआ।

(iii) त्रिभाग बल

दिन और रात्रि को तीन–तीन बराबर हिस्सों में बाँट लिया जाता है। दिन सूर्योदय से सूर्यास्त तक तथा रात्रि सूर्यास्त से सूर्योदय तक का समय होती है। त्रिभाग बल साधन के लिए यह मालूम करना होता है कि जन्म दिन या रात्रि के किस तिहाई भाग में हुआ है। उसी के अनुसार एक ग्रह को 60 षष्ट्यांश त्रिभाग बल मिलता है। उस ग्रह के अतिरिक्त बृहस्पति को हमेशा 60 षष्ट्यांश त्रिभाग बल के रूप में प्राप्त होता है। इसलिए त्रिभाग बल दो ग्रहों को मिलता है और उनमें से एक ग्रह हमेशा बृहस्पति ही होता है।

दिन के प्रथम त्रिभाग में बुध को, मध्य त्रिभाग में सूर्य को, व तृतीय त्रिभाग में शनि को 60 षष्ट्यांश बल प्राप्त होता है। इसी प्रकार रात्रि में भी क्रमशः प्रथम त्रिभाग में चंद्रमा को, द्वितीय में शुक्र को तथा तृतीय में मंगल को 60 षष्ट्यांश बल प्राप्त होता है।

उदाहरण जन्म पत्रिका में त्रिभाग बल साधनः

दिनमान = 17 घंटे 48 मि• – 7 घंटे 17 मि.

= 10 घंटे 31 मि•

जन्म समय = 16 घंटे 40 मिनट (भा• मा• स•)

इस प्रकार जन्म दिन के तीसरे त्रिभाग में हुआ इसलिए त्रिभाग बल निम्न प्रकार से होगा–

शनि – 60 षष्ट्यांश

बृहस्पति – 60 षष्ट्यांश

(iv) वर्षाधिपा बल

जिस विक्रमी संवत में जन्म हुआ है उसके प्रथम वार के स्वामी को 15 षष्ट्यांश वर्षाधिपा बल प्राप्त होता है।

उदाहरण जन्म पत्रिका में विक्रमी संवत 2056 में जन्म हुआ जिसकी शुरूआत 15 अप्रैल 1999 को बृहस्पति वार के दिन हुई। इसलिए उदाहरण जन्म पत्रिका में बृहस्पति को 15 षष्ट्यांश वर्षाधिपा बल प्राप्त हुआ।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

(v) मास बल

जिस मास में जन्म हुआ है उसके प्रथम वार के स्वामी को 30 षष्ट्यांश मास बल प्राप्त होता है।

उदाहरण जन्म पत्रिका में जन्म माह की शुरूआत 15.1.2002 को शनिवार के दिन हुई। इसलिए शनि को 30 षष्ट्यांश माह बल प्राप्त हुआ।

(vi) वार बल

जिस वार को जन्म हुआ है उस वार के स्वामी को 45 षष्ट्यांश वार बल प्राप्त होता है।

उदाहरण जन्म पत्रिका में जन्म शनिवार को हुआ, इसलिए शनि को 45 षष्ट्यांश वार बल प्राप्त हुआ।

(vii) होरा बल

एक होरा दिन का 24वाँ हिस्सा होता है और प्रत्येक होरा का एक ग्रह स्वामी होता है। सूर्योदय से अगले सूर्योदय तक एक दिन माना जाता है। दिन का पहला होरा उस वार का स्वामी होता है, दूसरा होरा पहले से छठे वार का स्वामी तथा तीसरा होरा दूसरे से छठे वार का स्वामी। यह क्रम चलता रहता है।

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार शनि, पृथ्वी से सर्वाधिक दूरी पर है तथा उसके वाद बृहस्पति, मंगल, सूर्य, शुक्र, बुध तथा शनि का पृथ्वी से दूरी का क्रम है।

दूसरा आसान तरीका होरा साधन का यह है कि पहला होरा वार का स्वामी, दूसरा होरा पहले से तीसरा उल्टे क्रम में, तीसरा होरा दूसरे से तीसरा उल्टे क्रम में। उदाहरण के लिए मंगलवार को प्रथम होरा मंगल का, द्वितीय सूर्य का, तृतीय शुक्र का, चतुर्थ बुध का, पंचम चंद्र का आदि–आदि।

उदाहरण जन्म पत्रिका में सूर्योदय का समय 7 घंटे 17 मिनट तथा जन्म समय 16 घंटे 40 मिनट है। इसलिए दसवें होरे में जन्म हुआ जो कि मंगल का होगा।

होरा की गणना स्थानीय समय के अनुसार की जाती है। उदाहरण जन्मपत्रिका में मंगल को 60 षष्ट्यांश होरा बल के रूप में प्राप्त हुआ।

(viii) अयन बल

क्रांति उत्तर व दक्षिण भेद से दो प्रकार की होती है। सभी ग्रहों की क्रांति पंचांगों में दी होती है। क्रांति को हमेशा सायन ग्रह स्पष्ट से मापा जाता है।

(i) सूर्य मार्च में मेष राशि में प्रवेश के बाद उत्तरवत् घूमता है और क्रांति शून्य से धीरे–धीरे बढ़कर मिथुन राशि के अंत में अर्थात् 90° पर 23°27′ हो जाती है।

(ii) 23°27′ उत्तर क्रांति का तात्पर्य है कि सूर्य उत्तरवत् आखिरी बिन्दु पर हैं।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

(iii) उसके बाद क्रांति क्रमशः घटती है जब तक कि कन्या के अन्तिम बिन्दु 180° पर यह शून्य हो जाती है तथा दक्षिणवत मार्ग की शुरूआत हो जाती है।

(iv) दक्षिण क्रांति अब शून्य से बढ़ती है और धनु राशि के अंतिम बिन्दु अर्थात् 270° पर 23°27′ हो जाती है।

(v) उसके बाद दक्षिण क्रांति घटती है जब तक कि 0° पर पहुँच कर शून्य न हो जाए।

अयन बल $= \left(\frac{23°27' \pm \text{क्रांति}}{46°54'}\right) \times 60$

$= (23°27' \pm \text{क्रांति}) \times 1.2793$

+ चिन्ह जब चंद्र या शनि दक्षिणवत क्रांति पर हो तो अथवा सूर्य, मंगल, बृहस्पति व शुक्र उत्तरवत क्रांति पर है। अन्यथा (–) चिन्ह अयन बल प्राप्त करने के लिए प्रयोग किया जाता है।

बुध के अयन बल साधन के लिए हमेशा (–) का इस्तेमाल किया जाता है।

सूर्य के अयन बल को हमेशा 2 से गुणा किया जाता है।

यदि सायन स्पष्ट 180°–360° के बीच हो तो ग्रहो की दक्षिण क्रांति और यदि सायन स्पष्ट 0–180° के बीच हो तो उत्तर क्रांति होती है।

क्रांति साधनः

पहले निरयण स्पष्ट में अयनांश की जोड़कर ग्रहो के सायन स्पष्ट निकाल लिये जाते हैं। उसके बाद ग्रहो की भुजा निम्न प्रकार निकाली जाती हैः

(i) यदि सायन स्पष्ट 90° के बराबर या उससे कम है तो वह ही ग्रह की भुजा होगी।

(ii) यदि सायन स्पष्ट 90° से अधिक परन्तु 180° के बराबर या कम हो तो, सायन स्पष्ट को 180° से घटाकर भुजा प्राप्त की जाती है।

(iii) यदि सायन स्पष्ट 180° से अधिक परन्तु 270° के बराबर या कम हो तो सायन स्पष्ट से 180° घटाकर भुजा प्राप्त की जाती है।

(iv) यदि सायन स्पष्ट 270° से अधिक परन्तु 360° के बराबर या कम हो तो सायन स्पष्ट को 360° से घटाकर भुजा प्राप्त की जाती है।

Future Point

प्रथम 15° के अन्त में क्रांति		362′ होती है
द्वितीय ,, ,, ,,		341′
तृतीय ,, ,, ,,		299′
चतुर्थ ,, ,, ,,		236′
पंचम ,, ,, ,,		150′
षष्ठ ,, ,, ,,		52′

तालिका 13 : उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों की क्रांति साधन

ग्रह	निरयण स्पष्ट	सायन स्पष्ट	भुजा	अंश और 15° के बीते हुए भाग	ग्रहों की क्रांति
सूर्य	277°52′	301°43′	58°17′	13°17′ तथा तीसरा भाग	$1002' + \frac{13°17' \times 236'}{15} = 20°11'$
चंद्र	115°18′	139°9′	40°51′	10°51′ तथा दूसरा भाग	$703' + \frac{10°51' \times 299'}{15} = 15°19'$
मंगल	320°21′	344°12′	21°48′	6°48′ तथा पहला भाग	$362' + \frac{6°48' \times 341'}{15} = 8°37'$
बुध	282°8′	305°59′	54°1′	9°1′ तथा तीसरा भाग	$1002' + \frac{9°1' \times 236'}{15} = 19°4'$
बृहस्पति	2°58′	26°49′	26°49′	11°49′ तथा पहला भाग	$362' + \frac{11°49' \times 341'}{15} = 11°11'$
शुक्र	243°15′	267°6′	87°6′	12°6′ तथा पाँचवा भाग	$1388' + \frac{12°6' \times 52'}{15} = 23°27'$
शनि	16°32′	40°23′	40°23′	10°23′ तथा दूसरा भाग	$703' + \frac{10°23' \times 299'}{15} = 13°30'$

Future Point

तालिका 14 : उदाहरण जन्म पत्रिका में अयन बल साधन

ग्रह	अयन बल
सूर्य (दक्षिण क्रांति)	(23°27′–20°11′) × 1.2793 = 3°16′ × 1.2793 = 4.18 × 2 = 8.36
चंद्र (उत्तर क्रांति)	(23°27′–15°19′) × 1.2793 = 8°8′ × 1.2793 = 10.40
मंगल (दक्षिण क्रांति)	(23°27′–8°37′) × 1.2793 = 14°50′ × 1.2793 = 18.97
बुध	(23°27′–19°4′) × 1.2793 = 4°23′ × 1.2793 = 5.60
बृहस्पति (उत्तर क्रांति)	(23°27′+ 11°11′) × 1.2793 = 34°37′ × 1.2793 = 44.29
शुक्र (दक्षिण क्रांति)	(23°27′–23°27′) × 1.2793 = 0
शनि (उत्तर क्रांति)	(23°27′–13°30′) × 1.2793 = 9°57′ × 1.2793 = 12.73

(ix) युद्ध बल

यदि दो ग्रहों की आपस में युति इस प्रकार हो कि उनके स्पष्ट अंश में 1° से कम का अन्तर हो तो ऐसे ग्रह आपस में ग्रह युद्ध में होते हैं। सूर्य व चंद्र के अतिरिक्त अन्य सभी ग्रह, ग्रह युद्ध में शामिल हो सकते हैं। जिस ग्रह के स्पष्ट अंश कम हों वह ग्रह, ग्रहयुद्ध में जीतता है। यदि दो ग्रह आपस में ग्रह युद्ध में शामिल हों तो ऐसे ग्रहों का स्थान बल, दिग्बल और काल बल (होरा बल तक) का योग निकाल लिया जाता है। दोनों ग्रहों के इन बलों में अन्तर निकालकर, इस अन्तर को जीतने वाले ग्रह के बल में जोड़ दिया जाता है तथा हारने वाले ग्रह के बल से घटा दिया जाता है।

उदाहरण जन्म पत्रिका में कोई भी ग्रह, ग्रहयुद्ध में शामिल नहीं है।

उपरोक्त 9 प्रकार के बलों को जोड़कर काल बल साधन किया जाता है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

तालिका 15 : उदाहरण जन्म पत्रिका में काल बल साधन

ग्रह	नतोन्नत बल	पक्ष बल	त्रिभाग बल	वर्षाधिपा बल	मास बल	वार बल	होरा बल	अयन बल	युद्ध बल	कुल काल बल (षष्ट्यांश में)
सूर्य	39.4	5.8	—	—	—	—	—	8.36	—	53.56
चंद्र	20.6	108.4	—	—	—	—	—	10.46	—	139.40
मंगल	20.6	5.8	—	—	—	—	60	18.97	—	105.37
बुध	60	5.8	—	—	—	—	—	5.60	—	71.40
बृहस्पति	39.4	54.2	60	15	—	—	—	44.29	—	212.89
शुक्र	39.4	54.2	—	—	—	—	—	0	—	93.60
शनि	20.6	54.2	60	—	30	45	—	12.73	—	201.93

अभ्यास

प्रश्न 1. काल बल से आप क्या समझते हैं ? काल बल में कौन–कौन से 9 बल शामिल हैं ?
प्रश्न 2. नतोन्नत बल क्या है ? इसका साधन कैसे करते हैं ?
प्रश्न 3. सूर्य, शुक्र व बृहस्पति को कब सर्वाधिक नतोन्नत बल मिलता है ?
प्रश्न 4. चंद्र, मंगल व शनि को कब सर्वाधिक नतोन्नत बल मिलता है ?
प्रश्न 5. बुध को कितना नतोन्नत बल मिलता है ?
प्रश्न 6. पक्ष बल क्या है ? वर्णन कीजिए।
प्रश्न 7. शुभ ग्रहों को किस पक्ष में बल मिलता है ?
प्रश्न 8. अशुभ ग्रहों की किस पक्ष में बल मिलता है ?
प्रश्न 9. त्रिभाग बल क्या है ? वर्णन कीजिए। ग्रह को सर्वाधिक त्रिभाग बल कितना मिलता है ?
प्रश्न 10. वर्षाधिपा बल क्या है ? किस ग्रह को कितना वर्षाधिपा बल मिलता है ?
प्रश्न 11. मास बल क्या है ? वर्णन कीजिए।
प्रश्न 12. वार बल क्या है ? वर्णन कीजिए।
प्रश्न 13. होरा बल क्या है ? वर्णन कीजिए।
प्रश्न 14. अयन बल क्या है ? इसका साधन किस प्रकार किया जाता है ?
प्रश्न 15. अयन बल में भुजा का क्या अर्थ है ?
प्रश्न 16. युद्ध बल क्या है ? वर्णन कीजिए।

Future Point

Future Point

चेष्टा बल

चेष्टा का अर्थ है ग्रह का वक्री होना। चंद्र व सूर्य के अतिरिक्त अन्य 5 ग्रह जब सूर्य से विशेष दूरी पर होते हैं तब वे वक्री होते हैं। ग्रह के वक्री होने के कारण जो बल प्राप्त होता है, चेष्टा बल कहलाता है। मंगल, बृहस्पति व शनि श्रेष्ठ ग्रह कहलाते हैं क्योंकि वे सूर्य से किसी भी दूरी पर भ्रमण कर सकते हैं। बुध और शुक्र निम्न ग्रह कहलाते हैं क्योंकि वे सूर्य से विशेष दूरी तक ही भ्रमण कर सकते हैं। सूर्य से बुध और शुक्र की अधिकतम दूरी 29° व 47° तक हो सकती है।

चेष्टा केन्द्र: चेष्टा बल साधन के लिए चेष्टा केन्द्र का मालूम करना आवश्यक है। चेष्टा केन्द्र निकालने के लिए निम्न का ज्ञान होना आवश्यक है।

(i) मध्यम ग्रह स्पष्ट: किसी भी ग्रह का मध्यम ग्रह स्पष्ट यह मान कर निकाला जाता है कि ग्रह गोलाकार पथ में समान गति से भ्रमण कर रहा है। जबकि स्पष्ट ग्रह किसी भी ग्रह की वास्तविक गति व वास्तविक भ्रमण के अनुसार निकाला जाता है। मध्यम ग्रह स्पष्ट की गणना स्पष्ट ग्रह स्पष्ट में साधन करके निकाली जाती है।

(ii) काल (Epoch): यहाँ 1.1. 1900 की शुरूआत यानि 0 घंटे 0 मि• पर 76° पू• रेखांश की स्थिति को काल माना गया है।

(iii) शीघ्रोच्च: किसी ग्रह की कक्षा में सबसे दूरी के बिन्दु को शीघ्रोच्च कहते हैं।

चेष्टा केन्द्र ज्ञात करने के लिए जन्म समय और काल में अन्तर निकाल कर उसको ग्रह की मध्यम गति से गुणा करके, काल के वाद मध्यम ग्रह स्पष्ट निकाला जा सकता है।

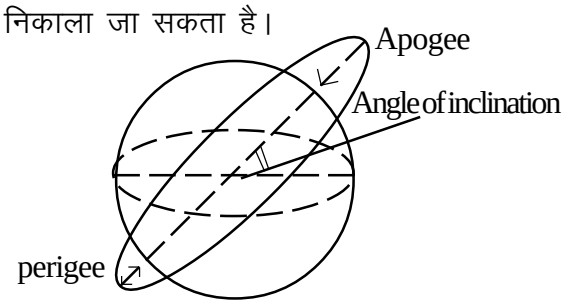

काल के समय ग्रहों के मध्यम स्पष्ट निम्न प्रकार हैं:

सूर्य	–	257.4568°
मंगल	–	270.22°
बृहस्पति	–	220.04°
शनि	–	236.74°

बुध और शुक्र का मध्यम स्पष्ट वही है जो कि सूर्य का।

मंगल, बृहस्पति और शनि का शीघ्रोच्च मध्यम सूर्य के बराबर होता है। बुध का शीघ्रोच्च 164° तथा शुक्र का 328.51° है।

चेष्टा केन्द्र = ग्रह का शीघ्रोच्च $-\frac{\text{(मध्यम स्पष्ट + स्पष्ट ग्रह)}}{2}$

यदि चेष्टा केन्द्र 6 राशियों से अधिक है तो उसे 12 राशि (360°) से घटाया जाता है।

चेष्टा बल $=\frac{\text{चेष्टा केन्द्र}}{3}$

यदि चेष्टा केन्द्र शून्य है तो चेष्टा बल भी शून्य है। यदि चेष्टा केन्द्र 180° है तो चेष्टा बल अधिकतम 60 षष्ट्यांश होता है। अयन बल ही सूर्य को चेष्टा बल होता है तथा पक्ष बल चंद्रमा का चेष्टा बल होता है

मध्यम ग्रह स्पष्ट साधन

मध्यम ग्रह स्पष्ट निकालने के लिए जन्म समय और काल में अन्तर निकाला जाता है।
निम्न तालिका इस अन्तर को निकालने में सहायक होगी

तालिका 16 : 1 जनवरी से मास के अन्त तक दिनों की संख्या

जनवरी	31	जुलाई	212
फरवरी	59	अगस्त	243
मार्च	90	सितम्बर	273
अप्रैल	120	अक्टूबर	304
मई	151	नवम्बर	334
जून	181	दिसम्बर	365

नोटः लोंद के साल में फरवरी में एक दिन जोड़ दिया जाता है।
उदाहरण जन्म पत्रिका में जन्म तिथि 22.1.2000 तथा जन्म समय 16 घंटे 40 मिनट हैं। जन्म स्थान का रेखांश 77°13′ है।

जन्म स्थान का रेखांश 77°13′
काल का रेखांश 76°
अन्तर 1°13′ = 5 मिनट (लगभग)
जन्म समय पर काल पर समय = (16 घंटे 40 मिनट–5 मिनट)
= 16 घंटे 35 मिनट
अर्धरात्रि से 16 घंटे 35 मि. = 0.69 दिन

∴ समयान्तर (काल और जन्म समय में)

= (2000 − 1900) × 365 = 36500
+ 25 (लोंद के साल)
36525 दिन
+ 21 (1 जनवरी से 21 जनवरी तक)
+ 0.69 (मध्यरात्री से जन्म समय)
36546.69 दिन

Future Point

उपरोक्त अन्तर को ग्रह की मध्यम गति से गुणा करके काल के समय ग्रहों के मध्यम स्पष्ट को जोड़ कर उसमें से 360° के गुणकों को घटा कर ग्रहों का मध्यम स्पष्ट निकला जाता है।
ग्रहों का मध्यम स्पष्ट निम्न प्रकार से होगा :

सूर्य का मध्यम स्पष्ट

तालिका 17 : कुल अन्तर 36546.69 दिन

30,000	दिनों में गति	48.0796
6000	,,	153.6159
500	,,	132.8013
40	,,	39.524
6	,,	5.9136
0.69	,,	0.6801

काल पर सूर्य का मध्यम स्पष्ट = 257.4568

∴ जन्म समय में सूर्य का मध्यम स्पष्ट = 638.0713

360° के गुणो को घटाने से सूर्य का मध्यम स्पष्ट 278.0713° हुआ।

तालिका 18 : सूर्य की दैनिक मध्यम गति (डिग्री में)
सूर्य का काल में मध्यम स्पष्ट – 257.4568°

	इकाई	सैकड़ा	हजार	दस हजार
1.	0.9856	98.5602	265.6026	146.0265
2.	1.9712	197.1205	71.2053	272.0531
3.	2.9568	295.6808	76.8080	48.0796
4.	3.9524	34.2411	342.4106	184.1062
5.	4.9280	132.8013	248.0133	320.1327
6.	5.9136	231.3616	153.6159	96.1593
7.	6.8992	329.9218	59.2186	232.1868
8.	7.8848	68.4821	324.8212	8.2124
9.	8.8704	167.0424	230.4239	144.2389

Future Point

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

तालिका 19 : मंगल की दैनिक मध्यम गति

मंगल का काल पर मध्यम स्पष्ट 270.22°

	इकाई	सैकड़ा	हजार	दस हजार
1.	0.524	52.40	164.02	200.19
2.	1.048	104.80	328.04	40.39
3.	1.572	157.21	132.06	240.58
4.	2.096	209.61	296.08	80.78
5.	2.620	262.01	100.10	280.97
6.	3.144	314.41	264.12	121.16
7.	3.668	6.81	68.14	321.36
8.	4.192	59.22	232.55	161.55
9.	4.716	111.62	36.17	1.74

तालिका 20 : बृहस्पति की दैनिक मध्यम गति

बृहस्पति का काल पर मध्यम स्पष्ट–220.04°

	इकाई	दहाई	सैकड़ा	हजार	दस हजार
1.	.08	0.83	8.31	83.1	110.96
2.	.17	1.66	16.62	166.19	221.96
3.	.25	2.49	24.93	249.29	332.89
4.	.33	3.32	33.24	332.39	83.85
5.	.41	4.15	41.55	55.48	194.82
6.	.50	4.99	42.86	138.58	305.78
7.	.58	5.82	58.17	221.67	56.74
8.	.66	6.65	66.58	304.77	167.71
9.	.75	7.48	74.79	78.87	278.67

Future Point

तालिका 21 : शनि की दैनिक मध्यम गति

शनि का काल पर मध्यम स्पष्ट–236.74°

	इकाई	दहाई	सैकड़ा	हजार	दस हजार
1.	.03	.33	3.34	33.44	334.39
2.	.07	.67	6.69	66.88	308.79
3.	.10	1.00	10.03	100.32	283.18
4.	.13	1.34	13.38	133.76	257.57
5.	.17	1.67	16.72	167.20	231.97
6.	.20	2.01	20.06	200.64	206.36
7.	.23	2.34	23.41	234.08	180.75
8.	.27	2.68	26.75	267.51	152.14
9.	.30	3.01	30.10	300.95	122.54

तालिका 22 : मंगल का मध्यम स्पष्ट

कुल अन्तर–36546.69 दिन

30,000 दिनों में गति		240.58
6,000	"	264.12
500	"	262.01
40	"	20.96
6	"	3.144
0.69	"	0.362

काल पर मध्यम ग्रह स्पष्ट $\frac{270.22}{1061.396^0}$

360° के गुणकों को घटाने से मंगल का मध्यम ग्रह स्पष्ट 341.396° हुआ।

Future Point

तालिका 23 : बृहस्पति का मध्यम स्पष्ट

30,000 दिनों में गति		332.89
6,000	"	138.58
500	"	41.55
40	"	3.32
6	"	0.50
0.69	"	0.05

काल पर मध्यम ग्रह स्पष्ट 220.04

736.93°

360° के गुणकों को घटाने से, बृहस्पति का मध्यम ग्रह स्पष्ट 16.93° हुआ।

तालिका 24 : शनि का मध्यम ग्रह स्पष्ट

30,000 दिनों में गति		283.18
6,000	"	200.64
500	"	16.72
40	"	1.34
6	"	0.20
0.69	"	0.02

काल पर मध्यम ग्रह स्पष्ट 236.74

738.84°

360° के गुणकों को घटाने से, शनि का मध्यम ग्रह स्पष्ट 18.84° हुआ।

उपरोक्त साधन से सभी ग्रहों के मध्यम स्पष्ट इस प्रकार है।

सूर्य	–	278.0713°
मंगल	–	341.396°
बुध	–	278.0713°
बृहस्पति	–	16.93°
शुक्र	–	278.0713°
शनि	–	18.84°

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

शीघ्रोच्च साधन

मंगल, बृहस्पति और शनि का शीघ्रोच्च सूर्य के मध्यम स्पष्ट के बराबर होता है। इसलिए केवल बुध तथा शुक्र के शीघ्रोच्च का ही साधन किया जाता है। इसके लिए तालिकायें 25 तथा 26 की सहायता की जाती है।

बुध का शीघ्रोच्चः

कुल अन्तर – 36546.69 दिन

30,000 दिनों के लए		9.54
6,000	"	73.91
500	"	246.16
40	"	163.69
6	"	24.55
0.69	"	2.82

काल पर शीघ्रोच्च 164.00

संशोधन = (6.67 - 0.00133 क*) 6. 537

= 6.67 - 0.00133 ×100 691.207

= 6.69 - 0.133

= 6.537

*क = (जन्म वर्ष -1900)

360° के गुणकों को घटाने से बुध का शीघ्रोच्च 331.207° हुआ।

शुक्र का शीघ्रोच्चः

30,000 दिनों के लिए		184.39
6,000	"	252.88
500	"	81.07
40	"	64.09
6	"	9.61
0.69	"	1.104

संशोधन = (–) (5+0.0001क) (-) 5.01

= (-) (5 + .0001 × 100) काल पर शीघ्रोच्च 328.51°

= (-) 5.01 916.6440

360° के गुणकों को घटाने से शुक्र का शीघ्रोच्च 196.64° हुआ।

Future Point

तालिका 25 : बुध शीघ्रोच्च गुणक तालिका

संशोधन जोड़िये : (6.67 – 0.00133 क)

	इकाई	दहाई	सैकड़ा	हजार	दस हजार
1.	4.09	40.92	49.23	133.32	243.18
2.	8.18	81.84	98.46	264.64	126.36
3.	12.28	122.77	147.69	36.95	9.54
4.	16.37	163.69	196.93	169.27	252.72
5.	20.46	204.62	246.16	301.59	135.90
6.	24.55	245.54	295.39	73.91	19.08
7.	28.65	286.46	344.62	206.34	262.26
8.	32.74	327.38	33.85	338.50	145.44
9.	36.83	8.31	83.09	110.86	28.63

तालिका 26 : शुक्र शीघ्रोच्च गुणक तालिका

संशोधन घटायें (5 + 0.0001 क)

	इकाई	दहाई	सैकड़ा	हजार	दस हजार
1.	1.60	16.02	160.21	162.15	181.46
2.	3.20	32.04	320.43	324.29	2.93
3.	4.81	48.06	120.64	246.44	184.39
4.	6.41	64.09	280.86	288.52	5.86
5.	8.01	80.11	81.07	90.73	187.32
6.	9.61	96.13	241.29	252.88	8.87
7.	11.21	116.15	41.50	55.02	190.25
8.	12.82	128.17	201.72	217.17	11.71
9.	14.42	144.19	1.93	19.32	193.18

उपरोक्त विवरण से सभी ग्रहों के शीघ्रोच्च निम्न प्रकार हैं:

मंगल – 278.0713°
बुध – 331.207°
बृहस्पति – 278.0713°
शुक्र – 196.64°
शनि – 278.0713°

Future Point

Future Point

तालिका 27 : उदाहरण जन्म पत्रिका में चेष्टा बल साधन

ग्रह	ग्रह स्पष्ट	मध्यम स्पष्ट	शीघ्रोच्च	चेष्टा केन्द्र = शीघ्रोच्च $-\frac{(\text{मध्यम स्पष्ट+ग्रह स्पष्ट})}{2}$	चेष्टा बल =चेष्टा केन्द्र÷3 (षष्ट्यांश में)
सूर्य				अयन बल =	8.36
चंद्र				पक्ष बल	= 108.40
मंगल	320°21′	341.396°	278.0713	$278.0713 - \frac{(341.396 + 320.35)}{2}$ = 278.0713–330.698 = 52.6267	17.54
बुध	282°8′	278.0713°	331.207	$331.207 - \frac{(278.0713 + 282.13)}{2}$ = 331.207–280.10 = 51.107	17.04
बृहस्पति	2°58′	16.93°′	278.0713	$278.0713 - \frac{(16.93 + 2.97)}{2}$ = 278.0713 – 9.95=268.1213 = 91.88 (360° से घटाने पर	30.63
शुक्र	243°15′	278.0713	196.64	$196.64 - \frac{(278.0713+243.251)}{2}$ = 196.64 – 260.661 = 64.021	21.34
शनि	16°32′	18.84	278.0713	$278.0713 - \frac{(18.84 + 16.53)}{2}$ = 278.0713 – 17.685=260.3863 = 91.6137 (360° से घटाने पर)	30.54

अभ्यास

प्रश्न 1. चेष्टा बल का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2. ग्रह स्पष्ट और मध्यम ग्रह स्पष्ट में अन्तर समझाइये।

पश्न 3. चेष्टा केन्द्र क्या है ? इसका साधन किस प्रकार किया जाता है ?

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

नैसर्गिक बल

यह प्रत्येक ग्रह का स्वाभाविक बल है तथा ग्रह की राशिचक्र में स्थिति पर निर्भर नहीं करता। शनि, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र, चंद्र व सूर्य को उत्तरोत्तर अधिक नैसर्गिक बल प्राप्त होता है।
प्रत्येक ग्रह का नैसर्गिक बल निम्न प्रकार है।

तालिका 28 ग्रहों का नैसर्गिक बल

ग्रह	नैसर्गिक बल (षष्ट्यांश में)
सूर्य	60.00
चंद्र	51.43
शुक्र	42.85
बृहस्पति	34.28
बुध	25.70
मंगल	17.14
शनि	8.57

उपरोक्त बल पहले ग्रह के बल से 60 / 7 = 8.57 घटाने पर प्राप्त होता है।
जब ग्रहों के बाकी बल लगभग बराबर हों तब नैसर्गिक बल का ज्यादा महत्व होता है।

अभ्यास

प्रश्न 1. नैसर्गिक बल क्या है ? वर्णन कीजिए।

प्रश्न 2. प्रत्येक ग्रह को कितना नैसर्गिक बल प्राप्त होता है।

Future Point

दृष्टि बल

कोई भी ग्रह अपने से 180° पर पूर्ण दृष्टि डालता है। ग्रह किसी दूसरे ग्रह या भाव पर अपने स्थान से 30° तक और अपने स्थान से 300° के बाद दृष्टि नहीं डालता। इसलिए किसी भी ग्रह की दृष्टि अपने स्थान से 30° पर शुरू होकर 300° पर समाप्त हो जाती है।

30° से शुरू होकर 300° तक दृष्टि बल निम्न प्रकार से बदलता है:

(i) 30° से शुरू होकर 60° तक क्रमशः बढ़ता है और 60° पर यह 15 षष्ट्यांश होता है।

(ii) 60° के बाद भी दृष्टि बल निरन्तर बढ़ता है और 90° पर पहुँचकर यह 45 षष्ट्यांश हो जाता है।

(iii) 90° के बाद दृष्टि बल घटना शुरू होता है और 120° पर जाकर यह 30 षष्ट्यांश हो जाता है।

(iv) 120° से 150° के बीच में भी दृष्टिबल निरन्तर घटता रहता है और 150° पर पहुँचकर यह शून्य हो जाता है।

(v) 150° के बाद दृष्टि बल बहुत तेजी से बढ़ता है और 180° पर यह पूर्ण अर्थात् 60 षष्ट्यांश हो जाता है।

(vi) 180° के बाद दृष्टि बल क्रमशः घटना शुरू होता है और 300° पर यह शून्य हो जाता है। दृष्टि बल को ग्राफ की सहायता से निम्न प्रकार दर्शाया जा सकता है।

देखने वाला ग्रह दृष्टा और जिसको देखा जा रहा है यह दृश्य ग्रह होता है। दृष्टा को दृश्य में घटाकर दृष्टि कोण निकाला जाता है यदि दृश्य में से दृष्टा नहीं घटता तो उसमे 360° जोड़कर घटाया जाता है।

दृष्टि कोण = दृश्य ग्रह स्पष्ट – दृष्टा ग्रह स्पष्ट

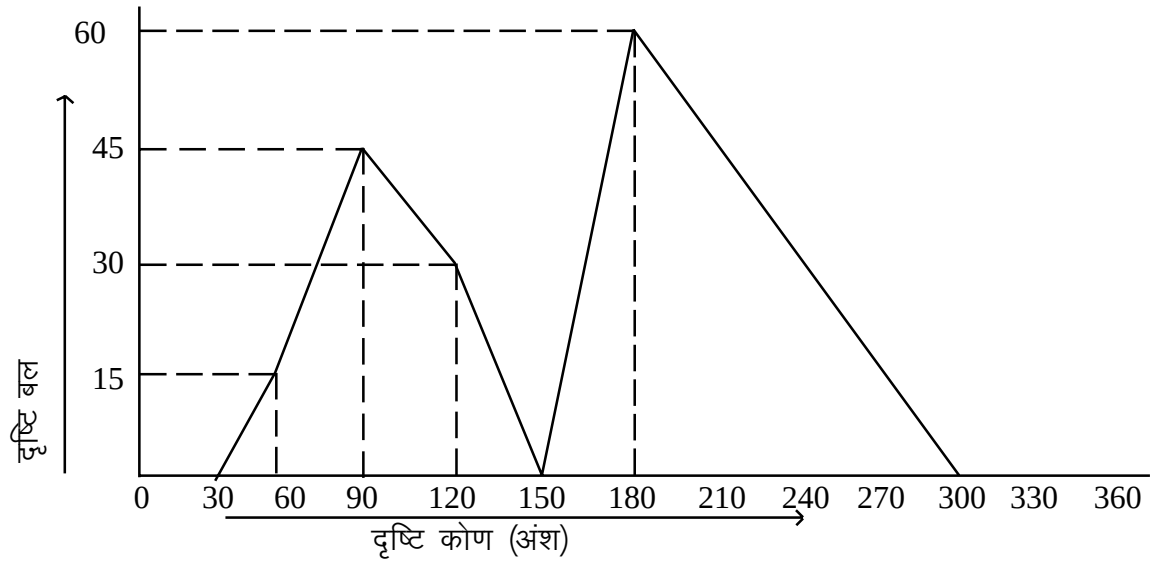

Future Point
www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

दृष्टि कोण निकाल कर दृष्टि पिंड निम्न प्रकार निकाला जाता है–

दृष्टि कोण	दृष्टि पिंड
30°–60°	$\frac{(\text{दृष्टि कोण}-30)}{2}$
60°–90°	(दृष्टि कोण–60)+15
90°–120°	$\frac{(120-\text{दृष्टि कोण})}{2}+30$
120°–150°	(150–दृष्टि कोण)
150°–180°	(दृष्टि कोण–150) × 2
180°–300°	$\frac{(300-\text{दृष्टि कोण})}{2}$

विशेष दृष्टि

कुछ ग्रहों की अपनी सामान्य दृष्टि के अतिरिक्त विशेष दृष्टि भी होती है। यह इस प्रकार हैः

शनि की विशेष दृष्टि तीसरे (60°–90°) तथा दसवें (270°–300°) भाव पर

बृहस्पति की विशेष दृष्टि पाँचवें (120°–150°) तथा नवें (240°–270°) भाव पर

मंगल की विशेष दृष्टि चौथे (90°–120°) तथा आठवें (210°–240°) भाव पर

मंगल, बृहस्पति तथा शनि का विशेष दृष्टि बल क्रमशः 15, 30, 45 षष्ट्यांश होता है।

सामान्य दृष्टि बल में विशेष दृष्टि बल को जोड़ा जाता है।

शुभ व पाप दृष्टिः शुभ ग्रहों की दृष्टि शुभ दृष्टि तथा पाप ग्रहों की दृष्टि पाप दृष्टि कहलाती है। शुभ दृष्टि + तथा पाप दृष्टि – होती है।

दृष्टि बल साधन

दृष्टि बल साधन के लिए सभी ग्रहों के बीच में दृष्टि कोण निकाला जाता है। ये दृष्टि कोण तालिका 29 में निकाले गये हैं।

दृष्टि कोण निकालने के पश्चात् दृष्टि पिंड निकाला जाता है। दृष्टि पिंड सभी दृष्टा ग्रहों का दृश्य ग्रह पर दृष्टि बल है। यह + या – हो सकता है जो कि इस बात पर निर्भर करेगा कि दृष्टि शुभ ग्रहों की है अथवा पाप ग्रहों की।

उदाहरण जन्म पत्रिका में चंद्र शुभ है तथा बुध एक पाप ग्रह है। दृष्टि पिंड को तालिका 30 में निकाला गया है।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

तालिका 29 उदाहरण जन्म पत्रिका में दृष्टि कोण साधन

दृश्य ग्रह →

दृष्टा ग्रह ↓

	सूर्य 277°52'	चंद्र 115°18'	मंगल 320°21'	बुध 282°8'	बृहस्पति 2°58'	शुक्र 243°15'	शनि 16°32'
सूर्य	------	115°18'-277°52' =--162°34'+360° =197°26'	320°21'-277°52' =42°29'	282°8'-277°52' =4°16'	2°58'-277°52' =--274°54'+360° =85°6'	243°15'-277°52' =--34°37'+360° =325°23'	16°32'-277°52' =--261°20'+360° =98°40'
चंद्र	277°52'-115°18' =162°34'	——	320°21'-115°18' =205°3'	282°8'-115°18' =166°50'	2°58'-115°18' =--112°20'+360° =147°40'	243°15'-115°18' =127°57'	16°32'-115°18' =--98°46'+360° =271°14'
मंगल	277°52'-320°21' =--42°29'+360° =317°31'	115°18'-320°21' =--205°3'+360° =154°57'	------	282°8'-320°21' =--37°13'+360° =322°47'	2°58'-320°21' =--317°23'+360° =42°37'	243°15'-320°21' =--76°6'+360° =283°54'	16°32'-320°21' =--303°49'+360° =56°11'
बुध	277°52'-282°8' --4°16'+360° =355°44'	115°18'-282°8' =--166°50'+360° =193°10'	320°21'-282°8' =37°13'	------	2°58'-282°8' =--279°10'+360° =80°50'	243°15'-282°8' =--38°53'+360° =321°7'	16°32'-282°8' =--265°16'+360° =94°44'
बृहस्पति	277°52'-2°58' =274°54'	115°18'-2°58' =112°20'	320°21'-2°58' =317°23'	282°8'-2°58' =279°10'	--------	243°15'-2°58' =240°17'	16°32'-2°58' =13°24'
शुक्र	277°52'-243°15' =34°37'	115°18'-243°15' = --127°57'+360° =232°3'	320°21'-243°15' =76°6'	282°8'-243°15' =38°53'	2°58'-243°15' =--240°17'+360° =119°43'	---------	16°32'-243°15' =--226°43'+360° =133°17'
शनि	277°52'-16°32' =261°20'	115°18'-16°32' =98°46'	320°21'-16°32' =303°49'	282°8'-16°32' =265°16'	2°58'-16°32' =--13°24'+360° =346°36'	243°15'-16°32' =226°43'	---------

Future Point

क–दृष्ट्रि कोण ख–दृष्ट्रि पिंड

तालिका 30 उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहो के दृष्टि पिंड

दृष्टा ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
	दृश्य ग्रह						
चंद्र	**क** 162°34' **ख** = (162°34'-150) / 2 =6.28	–	**क** 205°3' **ख** = (300-205°3') / 2 = 47.47	**क** 166°50' **ख**= (166°50'-150°)X2 = 33.66	**क** 147°40' **ख** = (150°-147°40') = 2.4	**क** 127°57' **ख** (150-127°57') = 22.05	**क** 271°14' **ख** = (300-271°14') / 2 = 14.38
बृहस्पति	**क** 274°54' **ख**=(300-274°54') / 2 =12.55	**क** 112°20' **ख**=(120°-112°20')+30 / 2 = 33.83	क 317°23' — **क** > 300 ख = 0	क 279°10' ख=(300-279°10') / 2 = 10.42	--------	क 240°17' क=(300-240°17')/2 = 24.9 Spl. Aspect = 30	क13°24' —– क< 30 ख = 0
शुक्र	क 34°37' ख=(34°37'-30) / 2 = 2.31	क 232°3' ख=(300-232°3') / 2 = 33.97	क 76°6' ख=(76°6'-60)+15 = 31.1	क 38°53' ख=(38°53'-30) / 2 = 4.45	क 119°43' ख=(120-119°43')+30 / 2 = 30.14	— ----	क 133°17' ख=(150-133°17') = 16.70
शुभ दृष्टिपिंडक	21.14	67.80	78.57	48.53	32.54	76.95	31.08
सूर्य	----	क 197°26' ख=(300°-197°26') / 2 = 51.28	क 42°29' ख=(42°29'-30) / 2 = 6.25	क 4°16' —– क < 30 ख = 0	क 85°6' ख=(85°6'-60)+15 = 40.1	क325°23' —– क > 300 ख = 0	क 98°40' ख=(120-98°-40')+30 / 2 = 40.66
मंगल	क 317°31' .... क > 300 ख = 0	क 154°57' ख=(154°57'-150)X2 = 9.9	—–	क 322°47' —– क > 300 ख = 0	क42°37' ख=(42°37'-30) = 6.3	क283°54' ख=(300-283°54') = 8.05	क56°11' ख=(56°11'-30) / 2 = 13.1
बुध	क 355°44' – क > 300 ख = 0	क 193°10' ख=(300°-193°10') / 2 = 53.40	क 37°13' ख=(37°13'-30) / 2 = 3.6	—– —–	क 80°50' ख=(80°50'-60)+15 = 35.8	क 321°7' —– क > 300 ख = 0	क 94°44' ख=(120°-94°44')+30 = 42.66
शनि	क 261°20' ख= 300°-261°20' / 2 = 19.33	क 98°46' ख=(120-98°46')+30 / 2 40.61	क 303°49' —– क > 300 ख = 0	क 265°16' ख=(300°-265°16') / 2 = 17.36	क 346°36' —– क > 300 ख = 0	क 226°43' ख=(300-226°43') / 2 = 36.65	—–
पाप दृष्टि पिंड ख	-- 19.33	- 155.19	–9.85	– 17.36	-- 82.20	-- 44.70	--96.42
दृष्टि पिंड क–ख	+ 1.81	-- 87.39	+ 68.72	+ 31.17	-- 49.66	+ 32.25	-- 65.34

Future Point

दृष्टि बल

दृष्टि बल, दृष्टि पिंड का चौथाई हिस्सा होता है। यह + या – हो सकता है। उदाहरण जन्म पत्रिका में दृष्टि बल साधन निम्न प्रकार है।

तालिका 31 उदाहरण जन्म पत्रिका में दृष्टि बल साधन

ग्रह	दृष्टि पिंड	दृष्टि बल
सूर्य	+ 1.81	+ 0.45
चंद्र	- 87.39	- 21.85
मंगल	+ 68.72	+ 17.18
बुध	+ 31.17	+ 7.79
बृहस्पति	- 49.66	- 12.42
शुक्र	+ 32.25	+ 8.06
शनि	- 65.34	- 16.33

अभ्यास

प्रश्न 1. दृष्टि बल क्या है ? दृष्टि बल साधन किस प्रकार किया जाता है ?

प्रश्न 2. किस अंश पर ग्रह की दृष्टि पूर्ण होती है ?

प्रश्न 3. किन अंशों पर ग्रह की कोई दृष्टि नहीं होती ?

प्रश्न 4. किन अंशों पर एक ग्रह दूसरे ग्रह को देख सकता है।

प्रश्न 5. 30° से 300° तक ग्रहों का दृष्टि बल बताइये ?

प्रश्न 6. दृष्टि कोण साधन किस प्रकार किया जाता है ?

प्रश्न 7. दृष्टि पिंड साधन किस प्रकार किया जाता है ?

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com

Future Point

ग्रहों का षड्बल

Future Point

ग्रहों के षड्बल साधन के लिए 6 प्रकार के बलों को जोड़ा जाता है। दृष्टि बल को + या – होने के अनुसार जोड़ा या घटाया जाता है। उपरोक्त विधि से षष्ट्यांश में ग्रह बल प्राप्त होता है जिसको 60 से भाग देने पर रूपा में षड्बल प्राप्त हो जाता है।

तालिका 32 उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों का षड्बल

ग्रह	स्थान बल	दिक् बल	काल बल	चेष्टा बल	नैसर्गिक बल	दृष्टि बल	षड्बल (षष्ट्यांश में)	षड्बल (रूपा में)
सूर्य	175.54	38.37	53.56	8.36	60	+0.45	336.28	5.60
चंद्र	175.07	44.18	139.40	108.40	51.43	-21.85	496.63	8.08
मंगल	195.0	52.53	105.37	17.54	17.14	+17.18	404.81	6.75
बुध	202.835	6.14	71.40	17.04	25.70	+7.79	330.91	5.52
बृहस्पति	241.195	19.76	212.87	30.63	34.28	-12.42	526.33	8.77
शुक्र	127.08	33.17	93.60	21.34	42.65	+8.06	325.90	5.43
शनि	124.91	22.39	201.93	30.54	8.57	-16.33	372.01	6.20

उदाहरण जन्म पत्रिका में बृहस्पति सर्वाधिक बली तथा शुक्र सबसे कम बली ग्रह है। ग्रहों के बल के अनुसार ही वे परिणाम देने में समर्थ होते हैं।

ग्रहों को अपने परिणाम देने में सामर्थ्य हेतु कम से कम निम्न बल की प्राप्ति होनी चाहिए:

ग्रह	स्थान बल	दिक् बल	काल बल	चेष्टा बल	अयन बल
बृहस्पति, बुध, सूर्य	165	35	50	112	30
चंद्र, शुक्र	133	50	30	100	40
मंगल, शनि	96	80	40	67	20

प्रत्येक ग्रह का न्यूनतम वांछित षड्बल निम्न प्रकार से होना चाहिएः

ग्रह	षड्बल (षष्ट्यांश में)	षड्बल (रूपा में)
सूर्य	390	6.5
चन्द्र	360	6
मंगल	300	5
बुध	420	7
बृहस्पति	390	6.5
शुक्र	330	5.5
शनि	300	5

यदि किसी ग्रह का न्यूनतम वांछित षड्बल है तब वह अपने परिणाम पूर्ण रूप से देगा। उदाहरण के लिए यदि शनि बली है तो वह लम्बी आयु तथा दुख भी देगा।

Future Point

इष्ट व कष्ट फल

यह जानने के लिए कि कोई भी ग्रह अपनी दशा व अर्न्तदशा में किस प्रकार के परिणाम देगा, उस ग्रह का इष्ट व कष्ट फल साधन किया जाता है।

इष्ट फल साधनः

ग्रह का इष्ट फल = $\sqrt{\text{उच्च बल} \times \text{चेष्टा बल}}$

उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों का इष्ट फल निम्न प्रकार है।

तालिका 33 : उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों का इष्ट फल

ग्रह	उच्च बल (तालिका 1)	चेष्टा बल (तालिका 27)	इष्ट फल
सूर्य	29.29	8.36	15.65
चंद्र	32.57	108.40	59.42
मंगल	52.55	17.54	30.36
बुध	20.96	17.04	18.90
बृहस्पति	29.32	30.63	29.97
शुक्र	22.08	21.34	21.70
शनि	1.16	30.54	5.95

कष्ट फल साधनः

ग्रहों का कष्ट फल =$\sqrt{(60-\text{उच्च बल}) \times (60-\text{चेष्टा बल})}$

Future Point

उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहों का कष्ट फल निम्न प्रकार है:

	(60-उच्च बल)	(60-चेष्टा बल)	कष्ट बल
सूर्य	30.71	51.64	39.82
चंद्र	27.43	48.40	36.44
मंगल	7.45	42.46	17.78
बुध	39.04	42.96	40.95
बृहस्पति	30.68	29.37	30.02
शुक्र	37.92	38.66	38.25
शनि	58.84	29.46	41.63

उदाहरण जन्म पत्रिका में ग्रहो के इष्ट व कष्ट फल निम्न पकार हैं:

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनि
इष्ट फल	15.65	59.42	30.36	18.90	29.97	21.70	5.95
कष्ट फल	39.82	36.44	17.78	40.95	30.02	38.28	41.63

जितना ज्यादा ग्रह का इष्ट बल होगा, उतने ही शुभ परिणाम ग्रह की दशा अर्न्तदशा में प्राप्त होंगे। इसी प्रकार जिस ग्रह का कष्ट फल इष्ट फल से ज्यादा होता है, उसके परिणाम अपनी दशा अर्न्तदशा में अशुभ होते हैं। उदाहरण जन्म पत्रिका में सूर्य, बुध, शुक्र और शनि का कष्ट फल, इष्ट फल की तुलना में अधिक है इसलिए इन ग्रहों की दशा अर्न्तदशा में अशुभ परिणाम मिलने की संभावना है।

अभ्यास

प्रश्न 1. इष्ट तथा कष्ट फल क्या हैं ? इनके साधन का वर्णन कीजिए।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

भाव बल

प्रत्येक भाव को उसमें कुछ ग्रहों के स्थित होने के कारण अथवा किन्हीं ग्रहों की दृष्टि होने के कारण, बल मिलता है, जिसको भाव बल कहते हैं। यदि किसी भाव का बल अधिक होता है तो जातक को उस भाव से सम्बन्धित सभी विषयों में लाभ होता है।

भाव बल, निम्न बलों के योग से बनता है:

(i) भावाधिपति बल

(ii) भाव दिग्बल

(iii) भाव दृष्टि बल

(i) भावधिपति बलः यह भाव के स्वामी का बल होता है। जिस राशि में भाव मध्य स्थित है, उसकी राशि का स्वामी भाव का स्वामी माना जाता है। प्रत्येक ग्रह का षड्बल पहले ही निकाला जा चुका है। उदाहरण जन्म पत्रिका में भाव स्वामी तथा उसका फल निम्न प्रकार है।

तालिका 34 : उदाहरण जन्म पत्रिका में भावाधिपति बल

भाव	भाव मध्य	भाव का स्वामी	बल (रूपा में)
I	$2^{s}23^{0}42'$	बुध	5.66
II	$3^{s}19^{0}3'$	चंद्र	8.28
III	$4^{s}16^{0}24'$	सूर्य	5.60
IV	$5^{s}12^{0}46'$	बुध	5.52
V	$6^{s}16^{0}24'$	शुक्र	5.43
VI	$7^{s}20^{0}3'$	मंगल	6.75
VII	$8^{s}23^{0}42'$	बृहस्पति	8.77
VIII	$9^{s}19^{0}3'$	शनि	6.20
IX	$10^{s}16^{0}24'$	शनि	6.20
X	$11^{s}12^{0}46'$`	बृहस्पति	8.77
XI	$0^{s}16^{0}24'$	मंगल	6.75
XII	$1^{s}20^{0}3'$	शुक्र	5.43

(ii) भाव दिग्बलः विभिन्न प्रकार की राशियों में भावों के होने के कारण जो बल मिलता है वह भाव दिग्बल कहलाता है। सभी राशियों को निम्न भागों में बाँटा गया है:

Future Point

1. नर या द्विपद राशियां: मिथुन, कन्या, तुला, कुंभ तथा धनु का पहला हिस्सा, नर या द्विपद राशियां हैं। ये राशियां लग्न में पूर्ण बली होती है तथा सप्तम भाव में इनका बल शून्य होता है।

2. जलचर राशियां: कर्क, मीन तथा मकर का दूसरा हिस्सा जलचर राशियां हैं। ये राशियां चतुर्थ भाव में पूर्ण बली तथा दसवें भाव में इनका बल शून्य होता है।

3. चतुष्पाद राशियां: मेष, वृषम, सिंह, धनु का दूसरा हिस्सा तथा मकर का पहला हिस्सा ये चतुष्पाद राशियां हैं। ये राशियां दशम भाव में पूर्ण बली होती हैं तथा चतुर्थ भाव में इनका बल शून्य होता है।

4.कीट राशियां: वृश्चिक कीट राशि है। यह सप्तम भाव में पूर्ण बली होती है तथा लग्न में इसका बल शून्य होता है।

उदाहरण जन्म पत्रिका में भाव दिग्बल साधन निम्न प्रकार से होगा:

प्रथम भाव: प्रथम भाव मिथुन राशि में है जो लग्न में पूर्ण बली है। इसलिए प्रथम भाव का दिग्बल 60 षष्ट्यांश हुआ।

द्वितीय भाव: यह भाव कर्क राशि में है जो कि चतुर्थ भाव में पूर्ण बली है। दशम भाव से गिनने पर 4 प्राप्त हुआ जिसको 10 से गुणा करने पर द्वितीय भाव का दिग्बल 40 षष्ट्यांश हुआ।

तृतीय भाव: तृतीय भाव सिंह राशि में है जो कि दशम भाव में पूर्ण बली है। चतुर्थ भाव से गिनने पर 11 प्राप्त हुआ और क्योंकि यह 6 से अधिक है 12 से घटाने पर 1 प्राप्त हुआ जिसको 10 से गुणा करने पर तृतीय भाव का दिग्बल 10 षष्ट्यांश हुआ।

चतुर्थ भाव: चतुर्थ भाव कन्या राशि में है जो लग्न में पूर्ण बली है। इसलिए सप्तम भाव से गिनने पर 9 प्राप्त हुआ जिसको 12 से घटाने पर 3 और 10 से गुणा करने पर चतुर्थ भाव का दिग्बल 30 षष्ट्यांश हुआ।

पंचम भाव: पंचम भाव तुला राशि में है जो लग्न में पूर्ण बली है। सप्तम भाव से गिनने पर 10 प्राप्त हुआ जिसको 12 से घटाने पर 2 तथा 10 से गुणा करने पर 20 प्राप्त हुआ। इसलिए पंचम भाव का दिग्बल 20 षष्ट्यांश हुआ।

षष्ठ भाव: षष्ठ भाव वृश्चिक राशि में है जो सप्तम भाव में पूर्ण बली है। लग्न से गिनने पर 5 तथा 10 से गुणा करने पर षष्ठ भाव का दिग्बल 50 षष्ट्यांश हुआ।

सप्तम भाव: सप्तम भाव धनु के दूसरे भाव में है जो कि दशम भाव में दिग्बली है। चतुर्थ भाव से गिनने पर 3 तथा 10 से गुणा करने पर सप्तम भाव का दिग्बल 30 षष्ट्यांश हुआ।

अष्टम भाव: अष्टम भाव मकर राशि के दूसरे भाग में है जो कि चतुर्थ भाव में पूर्ण बली है। दशम भाव से गिनने पर 10 मिला। जिसको 12 से घटाने पर 2 तथा 10 से गुणा करने पर अष्टम भाव का दिग्बल 20 षष्ट्यांश हुआ।

www.futurepointindia.com www.leogold.com www.leopalm.com
Future Point

नवम भावः नवम भाव कुम्भ राशि में है जो लग्न में पूर्ण बली है। सप्तम भाव से गिनने पर 2 तथा 10 से गुणा करने पर नवम भाव का दिग्बल 20 षष्ट्यांश हुआ।

दशम भावः दशम भाव मीन राशि में है जो कि चतुर्थ भाव में पूर्ण बली है। इसलिए इस भाव का दिग्बल शून्य हुआ।

एकादश भावः एकादश भाव मेष राशि में है जो कि दशम भाव में पूर्ण बली है। चतुर्थ भाव से गिनने पर 7 जिसको 12 से घटाने पर 5 तथा 10 से गुणा करने पर एकादश भाव का दिग्बल 50 षष्ट्यांश हुआ।

द्वादश भावः द्वादश भाव वृषम राशि में है जो दशम भाव में पूर्ण बली है। चतुर्थ भाव से गिनने पर 8 जिसको 12 से घटाने पर 4 तथा 10 से गुणा करने पर द्वादश भाव का दिग्बल 40 षष्ट्यांश हुआ।

तालिका 35 : उदाहरण जन्म पत्रिका में भाव दिग्बल

भाव	भाव दिग्बल (षष्ट्यांश में)
1	60
2	40
3	10
4	30
5	20
6	50
7	30
8	20
9	20
10	0
11	50
12	40

(iii) भाव दृष्टि बलः भावों पर ग्रहों की दृष्टि होती है। यह दृष्टि + या – इस बात पर निर्भर करती है कि ग्रह शुभ है या अशुभ। भाव दृष्टि बल साधन में प्रत्येक भाव को दृश्य ग्रह मान लिया जाता है तथा भाव दृष्टि बल की गणना ठीक उसी प्रकार की जाती है जिस प्रकार कि ग्रह दृष्टि बल की गणना। उदाहरण जन्म पत्रिका में भाव दृष्टि बल निम्न प्रकार से होगाः

Future Point

तालिका 36 : उदाहरण जन्म पत्रिका में भाव दृष्टि बल

	दृश्य भाव											
	I 83°42'	**II** 109°3'	**III** 136°24'	**IV** 162°46'	**V** 196°24'	**VI** 230°3'	**VII** 263°42'	**VIII** 289°3'	**IX** 316°24'	**X** 342°46'	**XI** 16°24'	**XII** 50°3'
चंद्र 115°18'	क=328°24' ख=0	क=353°45' ख=0	क=21°6' ख=0	क=47°26' ख=8.71	क=81°6' ख=36.1	क=114°45' ख=32.62	क=148°24' ख=1.6	क=173°45' ख=47.5	क=201°6' ख=49.45	क=237°28' ख=31.26	क=261°6' ख=19.45	क=65°15' ख=20.25
बृहस्पति 2°58'	क=80°44' ख=35.73	क=106°5' ख=36.95	क=133°26' ख=16.57 +30 (S.A)	क=159°48' ख=19.6	क=193°26' ख=53.28	क=227°5' ख=36.45	क=260°44' ख=19.55 +30 (S.A)	क=286°5' ख=6.95	क=313°26' ख=0	क=339°48' ख=0	क=14°26' ख=0	क=47°5' ख=7.55
शुक्र 24°15'	क=200°27' ख=49.77	क=225°48' ख=37.1	क=253°9' ख=23.42	क=279°31' ख=10.25	क=313°9' ख=0	क=346°48' ख=0	क=20°27' ख=0	क=45°48' ख=7.9	क=73°9' ख=28.15	क=99°31' ख=50.5	कA=133°9' ख=16.85	क=166°48' ख=33.6
बल	35.50	+ 74.05	+ 69.99	+ 38.56	+ 89.38	+ 69.07	+ 51.15	+ 62.35	+ 77.6	+ 81.76	+ 36.3	+61.4
सूर्य 277°52'	क=165°50' ख=31.26	क=91°11' ख=44.4	क=118°32' ख=30.73	क=244°54' ख=27.55	क=278°32' ख=10.74	क=312°11' ख=0	क=345°50' ख=0	क=11°11' ख=0	क=38°32' ख=4.26	क=64°54' ख=19.9	क=98°32' ख=40.73	क=332°11' ख=0
मंगल 115°18'	क=328°24' ख=0	क=353°45' ख=0	क=21°6' ख=0	क=47°28' ख=8.73	क=81°6' ख=36.1	क=114°15' ख=32.87 + 15 (SA)	क=148°24' ख=1.6	क=174°45' ख=49.5	क=201°6' ख=49.45	क=227°28' ख=36.26 + 15 (SA)	क=261°6' ख=19.45	क=294°45' ख=2.63
बुध 282°8'	क=261°34' ख=19.21	क=186°55' ख=56.55	क=214°16' ख=42.87	क=240°48' ख=29.6	क=274°16' ख=12.37	क=307°55' ख=0	क=341°34' ख=0	क=6°55' ख=0	क=34°16' ख=2.13	कA=60°38' ख=15.65	क=94°16' ख=42.87	क=127°55' ख=32.1
शनि 16°32'	क=67°10' ख=22.15 +45 (S.A)	क=92°31' ख=43.74	क=119°52' ख=30.05	क=146°14' ख=3.76	क=179°52' ख=59.7	क=213°31' ख=43.25	क=247°10' ख=26.42	क=272°31' ख=13.75	क=299°52' ख=.05	क=326°14' ख=0	क=359°52' ख=0	क=33°31' ख=1.73
बल ख	-97.62	- 144.69	- 103.65	- 69.74	- 48.91	- 91.12	- 28.02	- 63.25	- 55.89	- 86.81	- 103.05	- 36.46
योग क–ख	- 12.12	- 70.64	- 33.66	- 31.18	- 29.53	- 22.05	+ 23.13	- 0.9	+ 21.71	- 5.05	- 66.75	+ 24.94
भाव दृष्टिबल =योग/4	- 3.03	- 17.66	- 8.41	- 7.79	- 7.38	- 5.51	+ 5.78	- 0.22	+ 5.42	- 1.26	- 16.68	+ 6.23

नोट : क=दृष्टिकोण ख=दृष्टिबल

Future Point

तालिका 37: उदाहरण जन्म पत्रिका में भाव बल

भाव	भावाधि पति बल	भाव दिग्बल	भाव दृष्टि बल	भाव बल (षष्ट्यांश में)	भाव बल (रूपा में)
I	330.91	60	- 3.03	387.88	6.46
II	496.63	40	- 17.66	518.67	8.64
III	336.28	10	- 8.41	337.87	5.63
IV	330.91	30	- 7.79	353.12	5.88
V	325.90	20	- 7.38	338.52	5.64
VI	404.81	50	- 5.51	449.30	7.49
VII	526.33	30	+ 5.78	562.11	9.37
VIII	372.01	20	- 0.22	391.79	6.53
IX	372.01	20	+ 5.42	397.43	6.62
X	526.33	0	- 1.26	525.07	8.75
XI	404.81	50	- 16.88	438.13	7.30
XII	325.90	40	+ 6.23	372.12	6.20

अभ्यास

प्रश्न 1. भावाधिपति बल क्या है ? इसका साधन किस प्रकार किया जाता है।

प्रश्न 2. भाव दिग्बल क्या है ? इसका साधन किस प्रकार किया जाता है।

प्रश्न 3. उन राशियों को बताइये जिनको लग्न, चतुर्थ, सप्तम तथा दशम भाव में पूर्ण दिग्बल मिलता है।

प्रश्न 4. भाव दृष्टि बल क्या है? इसका साधन किस प्रकार किया जाता है ?

Future Point